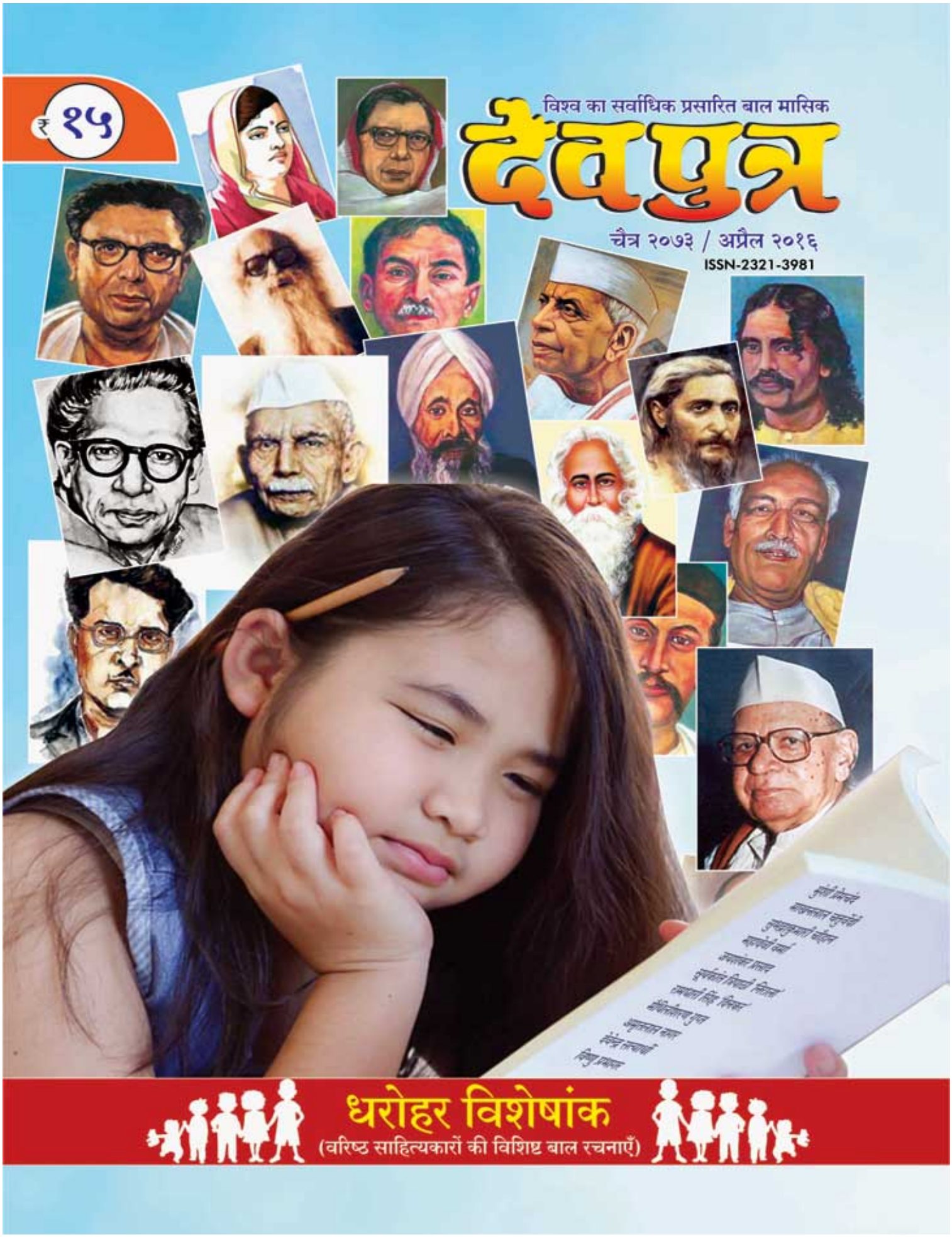

₹ १५

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

चैत्र २०७३ / अप्रैल २०१६
ISSN-2321-3981

धरोहर विशेषांक

(वरिष्ठ साहित्यकारों की विशिष्ट बाल रचनाएँ)

दृष्टि The Vision

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

Online Test Series

For Preliminary Exam-2016

Get yourself prepared for 7th August, 2016

General Studies & CSAT

Starts from: 24th January, 2016

First test Free for all students

For More Details visit: drishtiias.com

दृष्टि The Vision

करेंट अफेयर्स टुडे

महत्त्वपूर्ण लेख

- सीरिया में शह और मात का खेल
- ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस में भारत की स्थिति
- नेट न्यूट्रैलिटी का महत्त्व
- सरोगेसी के विनियमन से जुड़े प्रश्न
- करेंसी वॉर : एक नवीन वैश्विक आर्थिक संघर्ष

रणनीतिक आलेख

- मुख्य परीक्षा में उत्तर कैसे लिखें?

एथिक्स एवं वाद-विवाद

- कार्ल मार्क्स के नैतिक विचार
- भारत में बढ़ती असहिष्णुता

टॉपर्स से बातचीत

- मनीष कुमार वर्मा
- डॉ. विभोर अग्रवाल

मुख्य परीक्षा विशेषांक

- सामान्य अध्ययन के चारों प्रश्नपत्रों का 12 खंडों में वैज्ञानिक वर्गीकरण एवं प्रत्येक खंड पर इस वर्ष की मुख्य परीक्षा के लिये महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
- इन प्रश्नोत्तरों के माध्यम से सिर्फ 7 दिनों में पूरे सामान्य अध्ययन का त्वरित रिविज़न

और भी बहुत कुछ....

विभिन्न राज्यों से जुड़े
हिंदी माध्यम के IAS टॉपर
क्या कहते हैं इस पत्रिका के बारे में...

राजेन्द्र पैंसिया
IAS- उ.प्र. कैडर

"हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि पत्रिका कौन सी पढ़ी जाए? इसके लिये सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, प्रामाणिक और सारगर्भित स्रोत 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' के माध्यम से मिलता है। इंटीग्रेटेड एप्रोच से तैयारी के लिये हिंदी माध्यम में ऐसी किसी पत्रिका का अभाव था जो प्रिलिम्स, मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार की ज़रूरतों को पूरा कर सके। विकास सर के मार्गदर्शन में यह पत्रिका निश्चित ही इन सभी मानकों पर खरी उतरती है। हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी गुणात्मक ट्रांसलेटेड मैटीरियल पढ़ने की बजाय यह पत्रिका पढ़ें जो पूर्णतः मौलिक व अनुभवी टीम की मेहनत का परिणाम है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका उनके लिये निश्चित रूप से वरदान साबित होगी। शुभकामनाएँ।"

Available at your nearest book shop

वितरण और विज्ञापन के लिए संपर्क करें–
(+91) 8130392355

FOR DAILY CURRENT AFFAIRS UPDATE Visit at www.drishtiias.com

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 Contact : 011-47532596, (+91) 8130392354-56-57-59

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

चैत्र २०७३ ▪ वर्ष ३६
अप्रैल २०१६ ▪ अंक १०

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

इस वर्ष के विशेषांक के रूप में 'धरोहर अंक' आपके हाथ में है। सत्रांत में प्रतिवर्ष एक अनूठे विषय पर एक विशेषांक आपको सौंपने की देवपुत्र की परम्परा पुरानी है और इसमें आपको अभी तक 'वीर बालक', 'वीर बालिका' और 'क्रांति' से लेकर 'समरसता', 'विज्ञान', 'संगणक', 'खेल', 'बौद्धिक खेल' जैसे विषयों पर उसके विशेषांक देखने को मिले हैं। 'कारगिल' जैसे सामयिक विषयों पर भी बालोचित सामग्री जुटाकर उसे विशेषांक के रूप में आपके हाथों में सौंपा गया है।

यह अंक 'धरोहर अंक' है। वैसे तो पूर्व के सभी विशेषांक भी आपकी धरोहर ही हैं और आप में से अनेकों ने उन्हें उसी प्रकार से सहेज कर रखा भी है। परन्तु इस अंक को 'धरोहर अंक' नाम देने का कुछ विशेष हेतु है। यह अंक उस चुनौती का भी उत्तर है जिसमें प्रायः कहा जाता रहा है कि हिन्दी में बाल साहित्य का युग तो अब प्रारम्भ हो रहा है।

बच्चो! अंक की सामग्री से अनुमान लगाया जा सकता है कि बाल साहित्य का अतीत भी कितना गौरवशाली था। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद से लेकर युग प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तक और राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त से लेकर छायावाद और रहस्यवाद के पुरोधाओं तक तथा जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा और सुभद्राकुमारी चौहान जैसे साहित्यकारों ने कैसे श्रेष्ठ बाल साहित्य की रचना की है- इसकी बानगी है प्रस्तुत अंक।

आप जानते ही हैं कि कोई वस्तु धरोहर तब बनती है जब वह शाश्वत हो कालातीत हो। सैकड़ों वर्ष बाद भी तुलसी का रामचरित मानस या सहस्त्रों वर्ष बाद भी श्रीमद्भागवत गीता आज समाज की धरोहर है तो इसीलिए कि उनकी विषय वस्तु शाश्वत है। आज जब हम पढ़ते हैं कि अमेरिका की संसद भी एक दिन गीता पाठ से प्रारम्भ हुई तो गर्व से हमारा सीना फूल जाता है।

धरोहर अंक को ऐसा ही बनाने का प्रयत्न किया है। अपने पुराने साहित्यकारों ने भी बाल साहित्य को कैसा और कितना सम्पन्न बनाया, वह इस बानगी से देखने को मिल सकेगा? मेरा विश्वास है कि यह अंक आपकी 'धरोहर' भी बनेगा और आप अभी भी गर्व कर सकेंगे अपने श्रेष्ठ बाल साहित्य पर।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- गुब्बारे पर चीता - मुंशी प्रेमचन्द ०६
- छोटा जादूगर - जयशंकर प्रसाद ०८
- मौसी पपीतेवाली - देवेन्द्र सत्यार्थी २२
- चावल के छर्रे - कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' २६
- गजनंदनलाल... - विष्णु प्रभाकर ३०
- नटखट चाची - अमृतलाल नागर ३२

नाटक

- मगध महिमा -रामधारी सिंह 'दिनकर' ३६

लघु बोधकथा

- सौदागर - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' १८
- भेड़िया भेड़िया - १८
- गधा और मेंढक - १९

अनुवाद

- भिखारिन (मूल बांग्ला) - रवीन्द्रनाथ ठाकुर १२

कविता

- साल दर साल - भवानीप्रसाद मिश्र ०५
- चंदामामा, चमकीले तारे - अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ११
- चिड़िया कहाँ रहेगी, कोयल - महादेवी वर्मा १६
- ले लो लड्डू - माखनलाल चतुर्वेदी १७
- यह कदंब का पेड़ - सुभद्राकुमारी चौहान २०
- मेरी बिटिया रानी - २१
- चूरन का लटका, चने का लटका - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र २५
- तारे, चिड़ियाघर - हरिवंशराय बच्चन २८
- सरकस - मैथिलीशरण गुप्त २९
- चांद -प्रभाकर माचवे ३५
- लघु सरिता - गोपाल सिंह नेपाली ४०
- आगे आना है - वीरेन्द्र मिश्र ४१

भवानीप्रसाद मिश्र

भवानी भाई के नाम से साहित्य जगत की लोकप्रिय विभूति भवानी प्रसाद मिश्र अनेक भाषाओं के जानकार थे उन्होंने सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय का सम्पादन किया। सतपुड़ा के घने जंगल जैसी रचनाएं बच्चे क्या बड़े सभी को एक अदभुत आकर्षण से बांधती है। तुकों का खेल उनकी अतुकांत शैली का बाल कविता संग्रह है। यहाँ प्रस्तुत है उनकी एक मनभावन रचना जो बालमन से उनका निकट परिचय उजागर करती है।

साल दर साल

कविता

श्री भवानीप्रसाद मिश्र

साल शुरु हो दूध दही से,
साल खत्म हो शक्कर घी से,
पिपरमेंट, बिस्किट, मिसरी से
रहें लबालब दोनों खीसे।
मस्त रहें सड़कों पर खेलें,
नाचें-कूदें गाएँ -ठेलें,
रहें सुखी भीतर से जी से।
साँझ, रात, दोपहर, सवेरा,
सबमें हो मस्ती का डेरा,
कातें सूत बनाएँ कपड़े
दुनिया में क्यों डरें किसी से।
पंछी गीत सुनाए हमको,
बादल बिजली भाए हमको,
करें दोस्ती पेड़ फूल से
लहर-लहर से नदी-नदी से।
आगे-पीछे ऊपर-नीचे,
रहें हँसी की रेखा खींचे,
पास-पड़ोस, गाँव, घर, बस्ती
प्यार ढेर भर करें सभी से।

● भारतीय नववर्ष चैत्रशुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत २०७३, ८ अप्रैल से प्रारंभ हो रहा है। भवानीप्रसाद जी मिश्र द्वारा व्यक्त नववर्ष की यही शुभकामना देवपुत्र की ओर से आपके लिए।-सं.

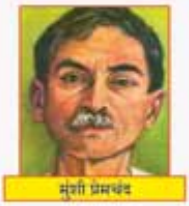
मुंशी प्रेमचंद

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र न केवल अपने अप्रतिम कहानियों और उपन्यासों से अमर हुए हैं बल्कि बाल साहित्य लेखन में भी आपकी अद्वितीय प्रतिभा प्रकट हुई है। 'कुत्ते की कहानी', 'रामचर्चा', 'ग्राम्य जीवन की कहानियाँ' और 'जंगल की कहानियां' बाल साहित्य की अनमोल कृतियाँ हैं। कुत्ते की कहानी बाल उपन्यास की श्रेणी में गिनी जाती है। यहाँ प्रस्तुत है भारत के इस महान कथा सम्राट की लिखी एक बाल कथा।

गुब्बारे पर चीता

✦ कहानी

मुंशी प्रेमचंद

'मैं तो जाऊंगा, जरूर जाऊंगा, चाहे कोई छुट्टी दे या न दे।'

एक स्कूल के सामने बड़ा मैदान है, लड़के खड़े हैं और बलदेव अपनी जेब में हाथ डाले हुए सब लड़कों को सरकस देखने के लिए चलने की सलाह दे रहा है।

बात यह थी कि स्कूल के पास एक मैदान में सरकस पार्टी आई हुई थी। सारे शहर की दीवारों पर उसके विज्ञापन चिपका दिए गए थे। विज्ञापन में तरह-तरह के जंगली जानवर अजीब-अजीब काम करते दिखाए गए थे। लड़के तमाशा देखने के लिए ललचा रहे थे। पहला तमाशा रात को शुरु होने वाला था। मगर हेडमास्टर साहब ने लड़कों को वहाँ जाने की मनाही कर दी थी-

इश्तिहार बड़ा आकर्षक था-

'आ गया है! आ गया है!!'

''जिस तमाशे का आप लोग भूख-प्यास छोड़कर इंतजार कर रहे थे, वहीं बम्बई सरकस आ गया है।

आइए और तमाशे का आनन्द उठाइए, बड़े-बड़े खेलों के सिवा एक खेल और भी दिखाया जाएगा, जो न किसी ने देखा होगा और न सुना होगा।''

लड़कों का मन तो सरकस में लगा हुआ था। सामने किताबें खोले जानवरों की चर्चा कर रहे थे। क्यों कर शेर और बकरी एक बर्तन से पानी पिएंगे? और इतना बड़ा हाथी पैरगाड़ी पर कैसे बैठेगा? पैरगाड़ी के पहिए बहुत बड़े-बड़े होंगे? और तोता बंदूक छोड़ेगा? और बनमानुष बाबू बनकर मेज पर बैठेगा।

बलदेव सबसे पीछे बैठा हुआ अपनी हिसाब की कापी पर शेर की तस्वीर खींच रहा था और सोच रहा था कि कल शनीचर नहीं, इतवार होता तो कैसा मजा आता।

बलदेव ने बड़ी मुश्किल से कुछ पैसे जमा किए थे। मना रहा था कि कब छुट्टी हो और कब भागूं। हेडमास्टर

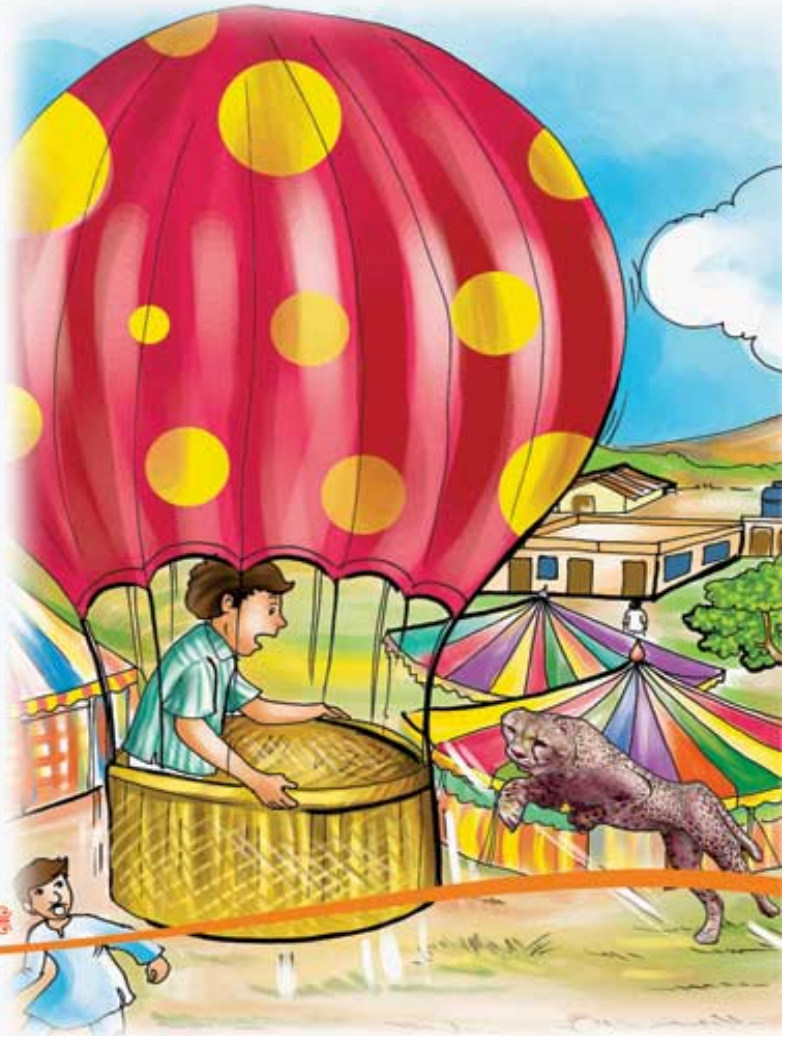

साहब का हुक्म सुनकर वह जामे से बाहर हो गया। छुट्टी होते ही वह बाहर मैदान में निकल आया और लड़कों से बोला– ''मैं तो जाऊँगा, जरूर जाऊंगा, चाहे कोई छुट्टी दे या न दे।'' मगर और लड़के इतने साहसी न थे। कोई उसके साथ जाने पर राजी न हुआ। बलदेव अब अकेला पड़ गया। मगर वह बड़ा जिद्दी था, दिल में जो बात बैठ जाती, उसे पूरा करके ही छोड़ता था। शनीचर को और लड़के तो मास्टर जी के साथ गेंद खेलने चले गए, बलदेव चुपके से खिसककर सरकस की ओर चला। वहाँ पहुंचते ही उसने जानवरों को देखने के लिए एक आने का टिकट खरीदा और जानवरों को देखने लगा। इन जानवरों को देखकर बलदेव मन में बहुत झुँझलाया। वह शेर है! मालूम होता है महीनों से इसे मलेरिया बुखार आ रहा हो। वह भला बीस हाथ ऊंचा उछलेगा। और यह सुन्दरवन का बाघ है? जैसे किसी ने इसका खून चूस लिया हो। मुर्दे की तरह पड़ा है। वाह रे भालू है या सूअर, और वह भी काना– जैसे मौत के चंगुल से निकल भागा हो। अलबत्ता यह चीता कुछ जानदार है और एक तीन टांग का कुत्ता भी।

यह कहकर बड़े जोर से हँसा। उसकी एक टांग किसने काट ली? दुमकटे कुत्ते तो देखे थे, पैर कटा कुत्ता आज ही देखा है। और यह दौड़ेगा कैसे?

उसे अफसोस हुआ कि गेंद छोड़कर यहाँ नाहक आया। एक आने पैसे भी गए। ऐसे जानवरों को तो मैं सेंत–मेंत भी न देखता।

इतने में एक बड़ा भारी गुब्बारा दिखाई दिया। उसके पास एक आदमी खड़ा चिल्ला रहा था–''आओ चले आओ, चार आने में आसमान की सैर करो।''

अभी वह उसी तरफ देख रहा था कि अचानक शोर सुनकर वह चौंक पड़ा। पीछे फिरकर देखा तो मारे डर के उसका दिल काँप उठा। वही चीता न जाने किस तरह पिंजरे से निकल कर उसी की तरफ दौड़ा चला आ रहा था। बलदेव जान लेकर भागा।

इतने में एक और तमाशा हुआ। इधर से चीता गुब्बारे की तरफ दौड़ा। जो आदमी गुब्बारे की रस्सी पकड़े हुए था, वह चीते को अपनी तरफ आता देखकर बेतहाशा भागा। बलदेव को और कुछ न सूझा तो वह झट से गुब्बारे पर चढ़ गया। चीता भी शायद उसे पकड़ने के लिए कूदकर गुब्बारे पर जा पहुँचा। गुब्बारे की रस्सी छोड़कर तो वह आदमी पहले ही भाग गया था। वह गुब्बारा उड़ने को बिल्कुल तैयार था। रस्सी छूटते ही वह ऊपर उठा। बलदेव और चीता दोनों ऊपर उठ गए। बात ही बात में गुब्बारा ताड़ के बराबर जा पहुँचा। बलदेव ने एक बार नीचे देखा तो लोग चिल्ला–चिल्लाकर उसे बचने के उपाय बतलाने लगे। मगर बलदेव के तो होश उड़े हुए थे। उसकी समझ में कोई बात न आई। ज्यों–ज्यों गुब्बारा उपर उठता जाता था चीते की जान निकली जाती थी। उसकी समझ में न आता था कि कौन मुझे आसमान की ओर लिए जाता है। वह चाहता तो बड़ी आसानी से बलदेव को चट कर जाता, मगर उसे अपनी ही जान की फ्रिक पड़ी हुई थी। सारा चीतापन भूल गया था। आखिर वह इतना डरा कि उसके हाथ–पाँव फूल गए और वह फिसलकर उलटा नीचे गिरा। जमीन पर गिरते ही उसकी हड्डी–पसली चूर–चूर हो गई।

अब तक तो बलदेव को चीते का डर था। अब यह फिक्र हुई कि गुब्बारा मुझे कहाँ लिए जाता है। वह एक बार घंटाघर के मीनार पर चढ़ा था। ऊपर से उसे नीचे के आदमी खिलौने से और घर घरौंदें से लगते थे। मगर इस वक्त वह उससे कई गुना ऊँचा था।

एकाएक उसे एक बात याद आ गई। उसने किसी किताब में पढ़ा था कि गुब्बारे का मुँह खोल देने से गैस निकल जाती है और गुब्बारा नीचे उतर आता है। मगर उसे यह न मालूम था कि मुँह बहुत धीरे–धीरे खोलना चाहिए। उसने एकदम उसका मुँह खोल दिया और गुब्बारा बड़े जोर से गिरने लगा। जब वह जमीन से थोड़ी ऊँचाई पर आ गया तो उसने नीचे की तरफ देखा, दरिया बह रहा था। फिर तो वह रस्सी छोड़कर दरिया में कूद पड़ा और तैरकर निकल आया।

● ● ●

जयशंकर प्रसाद

श्री जयशंकर प्रसाद हिन्दी काव्य में छायावाद के प्रवर्तकों में गिने जाते हैं। काव्य, कथा, नाटक, उपन्यास आदि विभिन्न विधाओं में उच्चकोटि की रचनाएँ करने वाले इस सरस्वती पुत्र ने बच्चों के लिए भी साहित्य रचना की है यह कई हिन्दी पाठकों को सुखद आश्चर्य प्रदान करेगा। यहाँ प्रस्तुत है एक मर्मस्पर्शी कहानी छोटा जादूगर।

छोटा जादूगर

✦ कहानी

श्री जयशंकर प्रसाद

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कलनाद गूंज रहा था। मैं खड़ा था उस छोटे फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीने वाले को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गंभीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ। उसके अभाव में भी संपन्नता थी।

मैंने पूछा– ''क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा?''

''मैंने सब देखा है। यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौनों पर निशाना लगाते हैं। तीर से नंबर छेदते हैं। मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिलकुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ।'' उसने बड़ी प्रगल्भता से कहा। उसकी वाणी में कहीं रुकावट न थी।

मैंने पूछा–''और उस परदे में क्या है? वहाँ तुम गए थे?''

''नहीं, वहाँ मैं नहीं जा सका। टिकट लगता है।''

मैंने कहा–''तो चलो– मैं वहाँ पर तुमको लिवा चलूँ।'' मैने मन–ही–मन कहा–'भाई! आज के तुम्ही मित्र रहे।'

उसने कहा–''वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए, निशाना लगाया जाए।''

मैंने उससे सहमत होकर कहा–''तो फिर चलो पहले शरबत पी लिया जाए।'' उसने स्वीकार सूचक सिर हिला दिया।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गरम हो रही थी। हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में उससे पूछा–''तुम्हारे घर में और कौन हैं?''

''माँ और बाबूजी।''

''उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया?

''बाबूजी जेल में हैं।''

''क्यों''

''देश के लिए।'' वह गर्व से बोला।

''और तुम्हारी माँ?''

''वह बीमार है।''

''और तुम तमाशा देख रहे हो?''

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी।

उसने कहा, ''तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।''

मैं आश्चर्य से उस तेरह–चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

''हाँ मैं सच कहता हूँ बाबूजी। माँ जी बीमार हैं, इसलिए मैं नहीं गया।''

''कहाँ?''

''जेल में! जब कुछ लोग खेल–तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना पेट भरूँ।''

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया। चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मन व्यग्र हो उठा। मैंने उससे कहा–''अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए।''

हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज। उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई। देखने वाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे? कुछ मेरी रूमाल में बँधे,

कुछ जेब में रख लिए गए।

लड़के ने कहा–''बाबूजी आपको तमाशा दिखाऊँगा। बाहर आइए, मैं चलता हूँ।'' वह नौ–दो ग्यारह हो गया। मैंने मन–ही–मन कहा, 'इतनी जल्दी आँख बदल गई।'

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर–उधर टहलता–देखता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर–नीचे आना देखने लगा। अकस्मात् किसी ने ऊपर के हिंडोले (झूले) से पुकारा–''बाबूजी!''

मैंने कहा–''कौन?''

''मैं हूँ छोटा जादूगर।''

****

कलकत्ते के सुरम्य बॉटनिकल–उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। बातें हो रही थीं। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। हाथ में चारखाने का खादी का झोला, साफ जाँघिया और आंधी बाँहों का कुरता। सिर पर मेरी रूमाल सूत की रस्सी से बँधी हुई थी। मस्तानी चाल में झूमता हुआ आकर वह कहने लगा–''बाबूजी, नमस्ते। आज कहिए तो खेल दिखाऊँ?''

''नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।''

''फिर इसके बाद क्या गाना–बजाना होगा, बाबूजी?''

''नहीं जी, तुमको....'' क्रोध से मैं कुछ और कहने जा रहा था। श्रीमती जी ने कहा–''दिखलाओ जी, तुम जो अच्छे आए। भला, कुछ मन तो बहले।'' मैं चुप हो गया, क्योंकि श्रीमती जी की वाणी में वह माँ की सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल

आरंभ किया।

उस दिन कार्निवल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बंदर घुड़कने लगा। गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था। सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

मैं सोच रहा था। बालक को आवश्यकता ने कितना शीघ्र चतुर बना दिया। यही तो संसार है।

ताश के सब पत्ते लाल हो गए। फिर सब काले हो गए। गले की सूत की डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने से नाच रहे थे। मैंने कहा- ''अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे।''

श्रीमती जी ने धीरे से उसे एक रुपया दे दिया। वह उछल उठा।

मैंने कहा-''लड़के!''

''छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।''

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती जी ने कहा-''अच्छा, तुम इस रुपए से क्या करोगे?''

''पहले भरपेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कंबल लूँगा।''

मेरा क्रोध अब लौट आया था। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा, 'ओह!' कितना स्वार्थी हूँ मैं। उसके एक रुपया पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न!'

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लता-कुंज देखने के लिए चले।

उस छोटे से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। अस्ताचलगामी सूर्य की अंतिम वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। एक शांत वातावरण था। हम लोग धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर आ रहे थे।

रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण हो आता था। तभी सचमुच वह एक झोंपड़ी के पास कंबल कंधे पर डाले मिल गया। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा-''तुम यहाँ कहाँ?''

''मेरी माँ यहीं है न! अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।'' मैं उतर गया। उस झोंपड़ी में देखा तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।

छोटे जादूगर ने कंबल ऊपर से डालकर उसके शरीर से चिमटते हुए कहा-''माँ!''

मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

****

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने ऑफिस में समय से पहुँचना था। कलकत्ते से मन ऊब गया था। फिर भी चलते-चलते एक बार उस उद्यान को देखने की इच्छा हुई। साथ ही साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता तो और भी...मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्द लौट आना था।

दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मैं मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी। भालू मनाने चला था। ब्याह की तैयारी थी, यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षण भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा-''आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?''

''माँ ने कहा है कि आज तुरंत चले आना। मेरी अंतिम घड़ी समीप है।'' अविचल भाव से उसने कहा।

''तब भी तुम खेल दिखाने चल आए।'' मैंने क्रोध से कहा। मनुष्य के सुख-दुःख का माप अपना ही साधन तो है। उसके अनुपात से वह तुलना करता है।

उसके मुँह पर वही परिचित तिरस्कार की रेखा फूट पड़ी।

उसने कहा-''क्यों न आता?''

और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षणभर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा-''जल्दी चलो।'' मोटरवाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनटों में मैं झोपड़े के पास पहुँचा। जादूगर दौड़कर झोंपड़े में माँ-माँ पुकारते हुए घुसा। मैं भी पीछे था, किंतु स्त्री के मुँह से-'बे....' निकलकर रह गया। उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गए। जादूगर उससे लिपट रो रहा था। मैं स्तब्ध था। उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू सा मेरे चारों और नृत्य करने लगा।

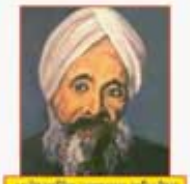

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

हरिऔध खड़ी बोली के उन्नायक रचनाकार हैं। प्रियप्रवास जैसे महाकाव्यों, प्रद्युम्न विजय जैसे नाटकों जैसी अनेक कृतियों के रचयिता हरिऔध का समीक्षा साहित्य भी कम नहीं। बच्चों के लिए भी आपने खूब लिखा। 'बाल विभव', 'बाल विलास', 'फूल-पत्ते', 'पद्यप्रसून', 'चन्द्र खिलौना', 'खेल तमाशा' आदि अनेक बाल काव्य संकलन हरिऔध जी के बच्चों को उपहार हैं।

✦ कविताएँ

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

चंदा मामा

चंदा मामा, दौड़े आओ,
दूध कटोरा भरकर लाओ।
उसे प्यार से मुझे पिलाओ,
मुझ पर छिड़क चाँदनी जाओ।
मैं तेरा मृग छौना लूँगा,
उसके साथ हँसूँ-खेलूँगा।
उसकी उछल-कूद देखूँगा,
उसको चाटूँगा-चूमूँगा।

चमकीले तारे

क्या चमकीले तारे हैं,
बड़े अनूठे, प्यारे हैं!
आँखों में बस जाते हैं,
जी को बहुत लुभाते हैं!
जगमग-जगमग करते हैं,
हँस-हँस मन को हरते हैं!
नए जड़ाऊ गहने हैं,
जिन्हें रात ने पहने हैं!
कितने रंग बदलते हैं,
बड़े दिए-से बलते[1] हैं!
घर के किसी उजाले हैं,
जो जगाने वाले हैं!
हीरे बड़े फबीले हैं,
छवि से भरे छबीले हैं!
कभी टूट ये पड़ते हैं
फूलों-जैसे झड़ते हैं!
चिनगी[2]-सी छिटकाते हैं,
छोड़ फुलझड़ी जाते हैं!

१ बलते हैं = जलते हैं
२ चिनगी = चिंगारी

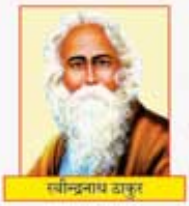
रवीन्द्रनाथ ठाकुर

कवीन्द्र रवीन्द्र बांग्ला के साहित्यकार हैं। उनकी गीतांजली को नोबेल पुरस्कार मिला। वे विश्वकवि के रूप में ख्यात हुए। बच्चों के लिए लेखन उनके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य था इसलिए बाल साहित्य को वे अपनी अनेक रचनाओं से समृद्ध कर गए। अनेक भाषाओं में उनकी रचनाओं का अनुवाद हुआ और वे सारे भारत के चहेते विश्वमान्य साहित्य शिल्पी बन गए। यहाँ प्रस्तुत है उनकी एक सशक्त बाल कहानी भिखारिन का हिन्दी रूपांतर।

भिखारिन

(मूल बांग्ला कहानी का हिन्दी अनुवाद)

✦ कहानी

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अंधी प्रतिदिन मंदिर के दरवाजे पर जाकर खड़ी होती, दर्शन करने वाले बाहर निकलते तो वह अपना हाथ फैला देती और नम्रता से कहती– ''बाबूजी, अंधी पर दया हो जाए।''

वह जानती थी कि मंदिर में आने वाले सहृदय और श्रद्धालु हुआ करते हैं। उसका यह अनुमान असत्य न था। आने–जाने वाले दो–चार पैसे उसके हाथ पर रख ही देते। अंधी उनको दुआएँ देती और उनकी सहृदयता को सराहती। स्त्रियाँ भी उसके पल्ले में थोड़ा–बहुत अनाज डाल दिया करती थी।

प्रातः से संध्या तक वह इसी प्रकार हाथ फैलाए खड़ी रहती। उसके पश्चात् मन–ही–मन भगवान को प्रणाम करती और अपनी लाठी के सहारे झोंपड़ी का पथ ग्रहण करती। उसकी झोंपड़ी नगर से बाहर थी। रास्ते में भी याचना करती जाती किन्तु राहगीरों में अधिक संख्या श्वेत वस्त्रों वालों की होती, जो पैसे देने की अपेक्षा झिड़कियाँ दिया करते हैं। तब भी अंधी निराश न होती और उसकी याचना बराबर जारी रहती। झोंपड़ी तक पहुँचते–पहुँचते उसे दो चार पैसे और मिल जाते।

झोंपड़ी के समीप पहुँचते ही एक दस वर्ष का लड़का उछलता–कूदता आता और उससे चिपट जाता। अंधी टटोलकर उसके मस्तक को चूमती।

बच्चा कौन है? किसका है? कहाँ से आया? इस बात से कोई परिचय नहीं था। पाँच वर्ष हुए पास–पड़ोस वालों ने उसे अकेला देखा था। उन्हीं दिनों एक दिन संध्या समय लोगों ने उसकी गोद में एक बच्चा देखा, वह रो रहा था, अंधी उसका मुख चूम–चूमकर उसे चुप कराने का प्रयत्न कर रही थी। वह कोई असाधारण घटना न थी, अतः किसी ने भी न पूछा कि बच्चा किसका है। उसी दिन से यह बच्चा अंधी के पास था और प्रसन्न था। उसको वह अपने से अच्छा खिलाती और पहनाती।

अंधी ने अपनी झोंपड़ी में एक हांडी गाड़ रखी थी। संध्या समय जो कुछ मांगकर लाती उसमें डाल देती ओर उसे किसी वस्तु से ढांप देती। इसलिए कि दूसरे व्यक्तियों की दृष्टि उस पर न पड़े। खाने के लिए अन्न काफी मिल जाता था। उससे काम चलाती। पहले बच्चे को पेट भरकर खिलाती फिर स्वयं खाती। रात में बच्चे को अपने वक्ष से

लगाकर वहीं पड़ी रहती। प्रातःकाल होते ही उसको खिला–पिलाकर फिर मंदिर के द्वार पर जा खड़ी होती।

काशी में सेठ बनारसीदास बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। बच्चा–बच्चा उनकी कोठी से परिचित है। बहुत बड़े देशभक्त और धर्मात्मा हैं। धर्म में उनकी बड़ी रुचि है। दिन के बारह बजे तक सेठ स्नान–ध्यान में संलग्न रहते। कोठी पर हर समय भीड़ लगी रहती। कर्ज के इच्छुक तो आते ही थे, परन्तु ऐसे व्यक्तियों का भी तांता बंधा रहता जो अपनी पूँजी सेठजी के पास धरोहर के रूप में रखने आते थे। सैकड़ों भिखारी अपनी जमा–पूँजी इन्हीं सेठजी के पास जमा कर जाते। अंधी को भी यह बात ज्ञात थी, किन्तु पता नहीं अब तक वह अपनी कमाई यहाँ जमा कराने में क्यों हिचकिचाती रही।

उसके पास काफी रुपए हो गए थे, हांडी लगभग पूरी भर गई थी। उसको शंका थी कि कोई चुरा न ले। एक दिन संध्या के समय अंधी ने वह हांडी उखाड़ी और अपने फटे हुए आंचल में छिपाकर सेठजी की कोठी पर पहुँची।

सेठजी बही–खाते के पृष्ठ उलट रहे थे, उन्होंने पूछा– ''क्या है बुढ़िया?''

अंधी ने हांडी उनके आगे सरका दी और डरते–डरते कहा– ''सेठजी, इसे अपने पास जमा कर लो, मैं अंधी, अपाहिज कहाँ रखती फिरूँगी?''

सेठजी ने हांडी की ओर देखकर कहा– ''इसमें क्या है?''

अंधी ने उत्तर दिया–''भीख मांग–मांगकर अपने बच्चे के लिए दो–चार पैसे संग्रह किए हैं, अपने पास रखते डरती हूँ, कृपया इन्हें आप अपनी कोठी में रख लें।''

सेठजी ने मुनीम की ओर संकेत करते हुए कहा– ''बही में जमा कर लो।'' फिर बुढ़िया से पूछा–''तेरा नाम क्या है?''

अंधी ने अपना नाम बताया, मुनीम जी ने नकदी गिनकर उसके नाम से जमा कर ली और वह सेठजी को आशीर्वाद देती हुई अपनी झोंपड़ी में चली गई।

दो वर्ष सुख के साथ बीते। इसके पश्चात् एक दिन लड़के को ज्वर ने आ दबाया। अंधी ने दवा–दारू की, झाड़–फूंक से भी काम लिया, टोने–टोटके की परीक्षा की, परन्तु संपूर्ण प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुए। लड़के की दशा दिन–प्रतिदिन बुरी होती गई, अंधी का हृदय टूट गया, साहस ने जवाब दे दिया, निराश हो गई। परन्तु फिर ध्यान आया कि संभवतः डॉक्टर के इलाज से फायदा हो जाए। इस विचार के आते ही वह गिरती–पड़ती सेठजी की कोठी पर आ पहुँची। सेठजी उपस्थित थे।

अंधी ने कहा–''सेठ जी मेरी जमा–पूँजी में से दस – पाँच रुपए मिल जाए तो बड़ी कृपा हो। मेरा बच्चा मर रहा है, डॉक्टर को दिखाऊँगी।''

सेठजी ने कठोर स्वर में कहा–''कैसी जमा पूँजी? कैसे रुपए? मेरे पास किसी के रुपए जमा नहीं है।''

अंधी ने रोते हुए उत्तर दिया–''दो वर्ष हुए मैं आपके पास धरोहर रख गई थी। दे दीजिए बड़ी दया होगी।''

सेठजी ने मुनीम की ओर रहस्यमयी दृष्टि से देखते हुए कहा–''मुनीम जी, जरा देखना तो, इसके नाम की कोई पूँजी जमा है क्या? तेरा नाम क्या है री?''

अंधी की जान में जान आई, आशा बंधी। पहला उत्तर सुनकर उसने सोचा की सेठ बेईमान है, किन्तु अब सोचने लगी संभवतः उसे ध्यान न रहा होगा। ऐसा धर्मी व्यक्ति भी भला कहीं झूठ बोल सकता है। उसने अपना नाम बता दिया। उलट–पलटकर देखा। फिर कहा–''नहीं तो, इस नाम पर एक पाई भी जमा नहीं है।''

अंधी वहीं जमी बैठी रही। उसने रो–रोकर कहा– ''सेठजी, परमात्मा के नाम पर धर्म के नाम पर, कुछ दे दीजिए। मेरा बच्चा जी जाएगा। मैं जीवन–भर आपके गुण गाऊँगी।''

परन्तु पत्थर में जोंक न लगी। सेठजी ने क्रुद्ध होकर उत्तर दिया–''जाती है या नौकर को बुलाऊँ।''

अंधी लाठी लेकर खड़ी हो गई और सेठजी की ओर मुँह करके बोली–''अच्छा भगवान तुम्हें बहुत दे।'' और अपनी झोंपड़ी की ओर चल दी।

यह आशीष न था बल्कि एक दुखी का शाप था। बच्चे

की दशा बिगड़ती गई, दवा–दारू हुई ही नहीं, फायदा क्यों कर होता। एक दिन उसकी अवस्था चिंताजनक हो गई, प्राणों के लाले पड़ गए, उसके जीवन से अंधी भी निराश हो गई। सेठजी पर रह–रहकर उसे क्रोध आता था। इतना धनी व्यक्ति है, दो–चार रुपए दे देता तो क्या चला जाता और फिर मैं उससे कुछ दान नहीं मांग रही थी, अपने ही रुपए मांगने आई थी। सेठजी से घृणा हो गई।

बैठे–बैठे उसको कुछ ध्यान आया। उसने बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया और ठोंकरे खाती, गिरती–पड़ती, सेठजी के पास पहुँची और उनके द्वार पर धरना देकर बैठ गई। बच्चे का शरीर ज्वर से भभक रहा था और अंधी का कलेजा भी।

एक नौकर किसी काम से बाहर आया। अंधी को बैठा देखकर उसने सेठजी, को सूचना दी, सेठजी ने आज्ञा दी कि उसे भगा दो।

नौकर ने अंधी से चले जाने को कहा, किन्तु वह उस स्थान से न हिली। मारने का भय दिखाया, पर वह टस से मस न हुई। उसने फिर अंदर जाकर कहा कि वह नहीं टलती।

सेठजी स्वयं बाहर पधारे। देखते ही पहचान गए। बच्चे को देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी शक्ल–सूरत उनके मोहन से बहुत मिलती–जुलती है। सात वर्ष हुए जब मोहन किसी मेले में खो गया था। उसकी बहुत खोज की, पर उसका कोई पता न मिला। उन्हें स्मरण हो आया कि मोहन की जांघ पर एक लाल रंग का चिन्ह था। इस विचार के आते ही उन्होंने अंधी की गोद से बच्चे की जांघ देखी। चिन्ह अवश्य था परन्तु पहले से कुछ बड़ा। उनको विश्वास हो गया कि बच्चा उन्हीं का है। तुरंत उसको छीनकर अपने कलेजे से चिपटा लिया। शरीर ज्वर से तप रहा था। नौकर को डॉक्टर लाने के लिए भेजा और स्वयं मकान के अंदर चल दिए।

अंधी खड़ी हो गई और चिल्लाने लगी– ''मेरे बच्चे को न ले जाओ, मेरे रुपए तो हजम कर गए अब क्या मेरा बच्चा भी मुझसे छीनोगे?''

सेठजी बहुत चिंतित हुए और कहा–''बच्चा मेरा है, यही एक बच्चा है, सात वर्ष पूर्व कहीं खो गया था अब मिला है, सो इसे कहीं नहीं जाने दूँगा और लाख यत्न करके भी इसके प्राण बचाऊँगा।''

अंधी ने एक जोर का ठहाका लगाया– ''तुम्हारा बच्चा है, इसलिए लाख यत्न करके भी उसे बचाओगे। मेरा बच्चा होता तो उसे मर जाने देते, क्यों? यह भी कोई न्याय है? इतने दिनों तक खून–पसीना एक करके उसको पाला है। मैं उसको अपने हाथ से नहीं जाने दूँगी।''

सेठजी की अजीब दशा थी। कुछ करते–धरते बन नहीं पड़ता था। कुछ देर वहीं मौन खड़े रहे फिर मकान के अंदर चले गए। अंधी कुछ समय तक खड़ी रोती रही फिर वह भी अपनी झोंपड़ी की ओर चल दी।

दूसरे दिन प्रातः काल प्रभु की कृपा हुई या दवा ने जादू का सा प्रभाव दिखाया। मोहन का ज्वर उतर गया। होश आने पर उसने आँख खोली तो सर्वप्रथम शब्द उसकी जबान से निकला, ''माँ।''

चहुं ओर अपरिचित शक्लें देखकर उसने नेत्र फिर बंद कर लिए। उस समय से उसका ज्वर अधिक होना आरंभ हो गया। माँ–माँ की रट लगी हुई थी, डॉक्टरों ने जवाब दे दिया, सेठजी के हाथ–पाँव फूल गए, चहुं ओर अंधेरा दिखाई पड़ने लगा।

''क्या करूँ एक ही बच्चा है, इतने दिनों बाद मिला भी तो मृत्यु उसको अपने चंगुल में दबा रही है, इसे कैसे बचाऊँ?''

सहसा उनको अंधी का ध्यान आया। पत्नी को बाहर भेजा कि देखो कहीं वह अब तक द्वार पर न बैठी हो। परन्तु वह वहाँ कैसी? सेठजी ने फिटन (कार) तैयार कराई और बस्ती से बाहर उसकी झोंपड़ी पर पहुँचे।

झोंपड़ी बिना द्वार की थी, अंदर गए। देखा अंधी एक फटे–पुराने टाट पर पड़ी है और उसके नेत्रों से अश्रुधार बह रही है। सेठजी ने धीरे से उसको हिलाया। उसका शरीर भी अग्नि की भांति तप रहा था।

सेठजी ने कहा– ''बुढ़िया! तेरा बच्चा मर रहा है,

डॉक्टर निराश हो गए, रह–रह वह तुझे पुकारता है। अब तू ही उसके प्राण बचा सकती है। चल और मेरे...नहीं– नहीं, अपने बच्चे की जान बचा ले।''

अंधी ने उत्तर दिया– ''मरता है तो मरने दो, मैं भी मर रही हूँ। हम दोनों स्वर्गलोक में फिर माँ बेटे की तरह मिल जाएंगे। इस लोक में सुख नहीं है, वहाँ मेरा बच्चा सुख में रहेगा। मैं वहाँ उसकी सुचारू रूप से सेवा–सुश्रुषा करूँगी।''

सेठजी रो दिए। आज तक उन्होंने किसी के सामने सिर न झुकाया था। किन्तु इस समय अंधी के पांवों पर गिर पड़े और रो–रोकर कहा– ''ममता की लाज रख लो, आखिर तुम भी उसकी माँ हो। चलो, तुम्हारे जाने से वह बच जाएगा।''

ममता शब्द ने अंधी को विकल कर दिया। उसने तुरंत कहा– ''अच्छा चलो।''

सेठजी सहारा देकर उसे बाहर लाए और फिटन पर बैठा दिया। फिटन घर की ओर दौड़ने लगी। उस समय सेठजी और अंधी भिखारिन दोनों की एक ही दशा थी। दोनों की यही इच्छा थी कि शीघ्र से शीघ्र अपने बच्चे के पास पहुँच जाएँ।

कोठी आ गई, सेठजी ने सहारा देखकर अंधी को उतारा और अंदर ले गए। भीतर जाकर अंधी ने मोहन के माथे पर हाथ फेरा। मोहन पहचान गया कि यह उसकी माँ का हाथ है। उसने तुरंत नेत्र खोल दिए और उसे अपने समीप खड़े हुए देखकर कहा– ''माँ तुम आ गई।''

अंधी भिखारिन मोहन के सिरहाने बैठ गई और उसने मोहन का सिर अपने गोद में रख लिया। उसको बहुत सुख अनुभव हुआ और वह उसकी गोद में तुरंत सो गया।

दूसरे दिन से मोहन की दशा अच्छी होने लगी। और दस–पंद्रह दिन में वह बिलकुल स्वस्थ हो गया। जो काम हकीमों के जोशांदे[१], वैद्यों की पुड़ियाँ और डॉक्टरों के मिक्सचर न कर सके वह अंधी की स्नेहमयी सेवा ने पूरा कर दिया।

मोहन के पूरी तरह स्वस्थ हो जाने पर अंधी ने विदा मांगी। सेठजी ने बहुत–कुछ कहा सुना कि वह उन्हीं के पास रह जाए परन्तु वह सहमत न हुई, विवश होकर विदा करना पड़ा। जब वह चलने लगी तो सेठजी ने रुपयों की एक थैली उसके हाथ में दे दी। अंधी ने मालूम किया–''इसमें क्या है।''

सेठजी ने कहा– ''इसमें तुम्हारी धरोहर है, तुम्हारे रुपए। मेरा वह अपराध...''

अंधी ने बात काट कर कहा– ''यह रुपए तो मैंने तुम्हारे मोहन के लिए संग्रह किए थे, उसी को दे देना।

अंधी ने थैली वहीं छोड़ दी, और लाठी टेकती हुई चल दी। बाहर निकलकर फिर उसने उस घर की ओर नेत्र उठाए उसके नेत्रों से अश्रु बह रहे थे किन्तु वह एक भिखारिन होते हुए भी सेठ से महान थी। इस समय सेठ याचक था और वह दाता थी।

●●●

१ जोशान्दे-जड़ी बूटी उबालकर बनाया गया काढ़ा

महादेवी वर्मा

महादेवी करुणा की कवियित्री कही जाती हैं वे हिन्दी की महान रचनाकारों में अग्रगण्य है जिनने साहित्य की विविध विधाओं से हिन्दी का कोष भरा है। इस महान कलमकार की कलम ने बच्चों के लिए भी मन से रचा। कविताएं लिखी कहानियाँ और संस्मरण भी। पढ़िए उनकी बच्चों के लिए लिखी रचनाओं की एक झलक।

कोयल

डाल हिलाकर आम बुलाता,
तब कोयल आती है।
नहीं चाहिए इसको तबला,
नहीं चाहिए हारमोनियम,
छिप-छिपकर पत्तों में यह तो
गीत नया गाती है।
चिक्-चिक् मत करना रे निक्की,
भौंक न रोजी रानी,
गाता एक, सुना करते हैं
सब तो उसकी बानी।
आम लगेंगे इसीलिए यह
गाती मंगल गाना,
आम मिलेंगे सबको, इसको
नहीं एक भी खाना।
सबके सुख के लिए बेचारी
उड़-उड़कर आती है,
आम बुलाता है, तब कोयल
काम छोड़ आती है।

✦ कविता

श्रीमती महादेवी वर्मा

चिड़िया कहाँ रहेगी?

आँधी आई जोर शोर से,
डालें टूटी हैं, झकोर से,
उड़ा घोंसला अंडे फूटे,
किससे दुःख की बात कहेगी।
अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी?

घर में पेड़ कहाँ से लाएँ,
कैसे यह घोंसला बनाएँ,
कैसे फूटे अंडे जोड़ें,
किससे यह सब बात कहेगी!
अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी?

माखनलाल चतुर्वेदी

एक भारतीय आत्मा के नाम से क्रांतिकारी काव्य सर्जक के रूप में ख्यात माखनलाल जी की 'पुष्प की अभिलाषा' हिन्दी काव्य कोष की बहुमूल्य साहित्य मणि है। राजगिरे के लड्डू पर उनकी रचना बच्चों में लोकप्रिय बहुत हुई थी।

ले लो लड्डू

कविता

श्री माखनलाल चतुर्वेदी

ले लो दो आने के चार,
लड्डू राजगिरे के यार।
यह है धरती जैसे गोल,
ढुलक पड़ेंगे गोल-मटोल।
इनके मीठे स्वादों में ही,
बन जाता है इनका मोल।
दामों का मत करो विचार,
ले लो दो आने के चार।

लोगे खूब मजा लाएँगे,
ना लोगे तो ललचाएँगे।
हँसी-खुशी से सब खाएँगे
इनमें बाबू जी का प्यार,
ले लो दो आने के चार।

कुछ देरी से आया हूँ मैं,
माल बनाकर लाया हूँ मैं।
मौसी की नजरें इन पर है,
फूफा पूछ रहे क्या दर हैं।
जल्द खरीदो जुटा बाजार,
ले लो दो आने के चार।

●●●

१ आना पैसे की तरह पुराने जमाने में चलने वाली मुद्रा है। १ रुपए में १६ आने होते थे।२ आने लगभग १२ पैसे, चार आने अर्थात २५ पैसे। चार आने आठ आने आपके भी सुने हुए शब्द होंगे। हिन्दी के कई मुहावरों में इस शब्द का प्रयोग होता है।-सं.

लघु बोध कथाएं

सौदागर

✦ कहानी

श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

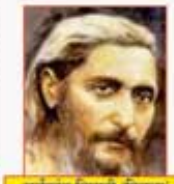
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

आधुनिक हिन्दी कविता के दिग्गजों में छायावाद के प्रमुख स्तम्भ और मुक्तछन्द के प्रवर्तक निराला की उत्कृष्ट लेखनी व गंभीर रचनाओं से भला हिन्दी का कोई भी पाठक अपरिचित न होगा। बच्चों के लिए भी निराला की लेखनी उसी कुशलता से चली। वे कहते थे- ''वही कवि या लेखक बड़ा है जिसकी रचनाएं बच्चों के दिल और यादों में बसी रह जाती है।'' ईसप की रचनाओं का रूपान्तरण हो या सीख भरी कहानियाँ या ध्रुव, प्रह्लाद, प्रताप पर रचित बाल उपन्यास ये सब बाल साहित्य की धरोहर बन गए। यहाँ प्रस्तुत हैं सीख भरी कहानियों से चुनी कुछ लघुकथाएं।

एक सौदागर समुद्री यात्रा कर रहा था, एक रोज उसने जहाज के कप्तान से पूछा-''कैसी मौत से तुम्हारे बाप मरे?''

कप्तान ने कहा-''जनाब मेरे पिता, मेरे दादा और मेरे परदादा समंदर में डूब मरे।''

सौदागर ने कहा-''तो बार-बार समुद्र की यात्रा करते हुए तुम्हे समंदर में डूबकर करने का खौफ नहीं होता?''

''बिलकुल नहीं,'' कप्तान ने कहा, ''जनाब कृपा करके बतलाइए कि आपके पिता, दादा और परदादा किस मौत के घाट उतरे?''

सौदागर ने कहा- ''जैसे दूसरे लोग मरते हैं, वे पलंग पर सुख की मौत मरे।''

कप्तान ने जवाब दिया-'तो आपको पलंग पर लेटने का जितना खौफ होना चाहिए, उससे ज्यादा मुझे समुद्र में जाने का नहीं।'

विपत्ति का अभ्यास पड़ जाने पर वह हमारे लिए

भेड़िया भेड़िया

एक चरवाहा लड़का गांव के जरा दूर पहाड़ी पर भेडें ले जाया करता था। उसने मजाक करने और गांववालों पर चड्डी गाँठने की सोची। दौड़ता हुआ गांव के अंदर आया और चिल्लाया- ''भेड़िया, भेड़िया! मेरी भेड़ों को भेड़िया ले गया है।''

गांव की जनता टूट पड़ी। भेड़िया खेदने के हथियार ले लिए। लेकिन उनके दौड़ने और व्यर्थ हाथ-पैर मारने की चुटकी लेता हुआ चरवाहा लड़का आँखों में मुसकराता रहा। समय-समय पर कई बार उसने यह हरकत की। लोग धोखा खाकर उतरे चेहरे से लौट आते थे।

एक रोज सही में उसकी भेड़ों में भेड़िया लगा और और एक के बाद दूसरी भेड़ तोड़ने लगा। डरा हुआ चरवाहा गाँव आया और भेड़िया-भेड़िया चिल्लाया।

गांव के लोगों ने कहा- ''अबकी बार चकमा नही चलने का। चिल्लाता रह।''

लड़के की चिल्लाहट की ओर उन लोगों ने ध्यान नहीं दिया। भेड़िये ने उसके दल की कुल भेड़ें मार डालीं, एक को भी जिन्दा नहीं छोड़ा।

इस कहानी से यह सीख मिलती है कि जो झूठ बोलने का आदी है, उसके सच बोलने पर भी लोग कभी विश्वास नहीं करते।

गधा और मेढ़क

एक गधा लकड़ी का भारी बोझ लिए जा रहा था। वह एक दलदल में गिर गया। वहाँ मेढकों के बीच जा लगा। रेंकता और चिल्लाता हुआ वह इस तरह साँसे भरने लगा, जैसे दूसरे ही क्षण मर जाएगा।

आखिर को एक मेढक ने कहा-''दोस्त, जब से तुम इस दलदल में गिरे, ऐसा ढोंग क्यों रच रहे हो? मैं हैरत में हूँ, जब से हम यहाँ है, और तब से तुम होते तो न जाने क्या करते?''

हर बात को जहाँ तक हो, सँवारना चाहिए। हमसे भी बुरी हालत वाले दुनिया में हैं।

देवपुत्र बाल मासिक के विगत वर्षों में प्रकाशित
लोकप्रिय अंकों का सजिल्द संकलन

उपलब्ध है ...

देवपुत्र पत्रिका के विगत वर्षों में अनेक अंक जिन्हें पाठक अपने पुस्तकालय में संकलित करना चाहते हैं पाठकों की मांग पर उपलब्ध १२-१२ अंकों का सजिल्द संच (फाईल) डाक खर्च सहित मात्र १००/- मूल्य पर उपलब्ध है।

इच्छुक पाठक *देवपुत्र-४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)* के पते पर मनिआर्डर/ड्राफ्ट/चेक द्वारा निर्धारित शुल्क भेज कर प्राप्त करें। यह सुविधा उपलब्ध अंकों के लिए है एवं अंक उपलब्ध रहने तक ही प्रदान की जा सकेगी।

सुभद्राकुमारी चौहान

'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' व 'झाँसी की रानी की समाधि' जैसी लोक विख्यात रचनाओं की लेखिका सुभद्राकुमारी चौहान ने 'कोयल' और 'सभा का खेल' नामक दो बाल कविता संग्रह भी दिए हैं। वे बालमन की सूक्ष्म भावनाओं की कुशल चितेरी थीं। इन कविताओं में उसकी झलक स्पष्ट दिखाई देती है।

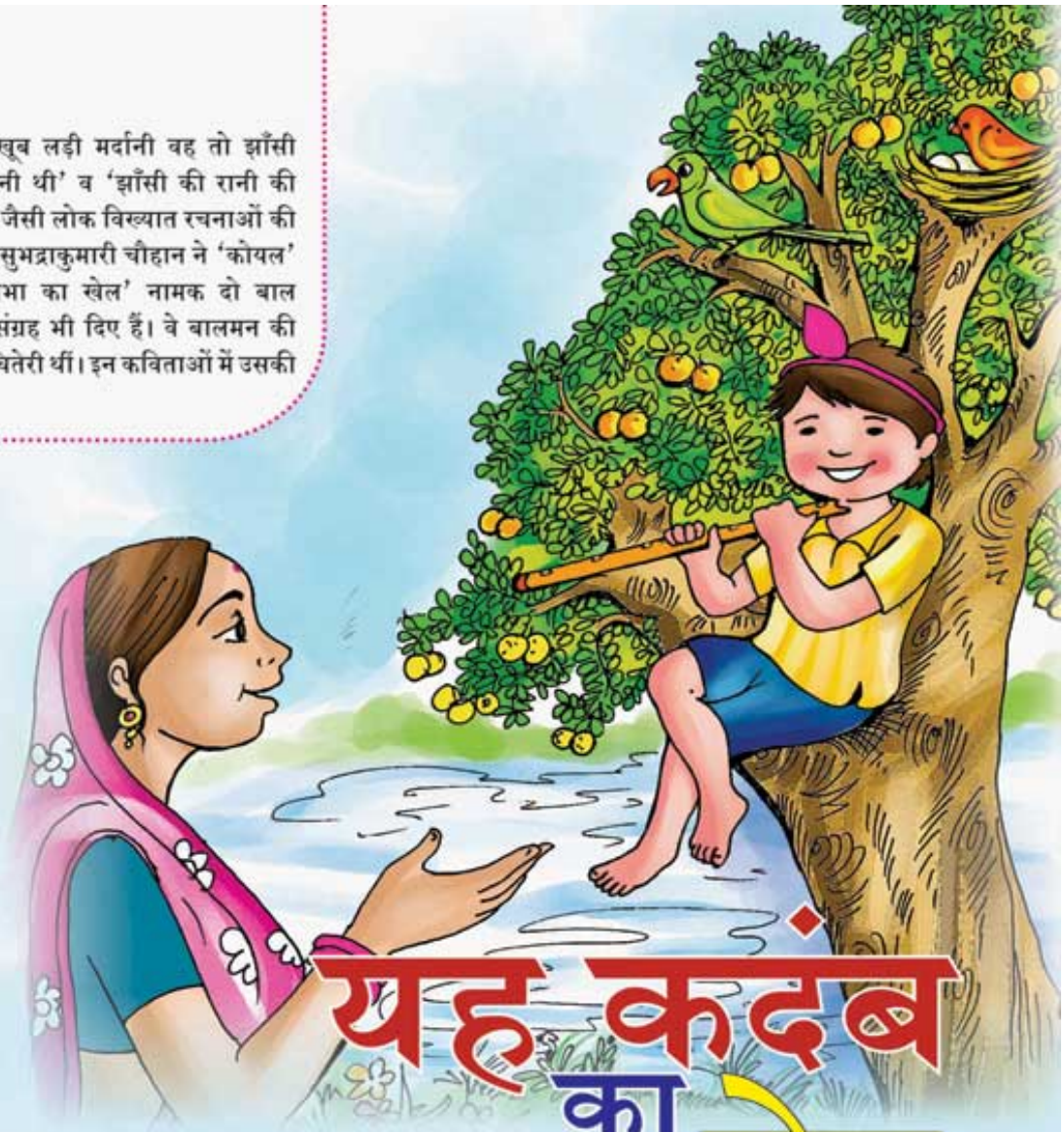

यह कदंब का पेड़

कविता

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

यह कदंब का पेड़ अगर माँ, होता यमुना तीरे।
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।।
ले देतीं यदि मुझे बाँसुरी तुम दो पैसे वाली।
किसी तरह नीची हो जाती, यह कदंब की डाली।।
तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं चुपके-चुपके आता।
उस नीची डाली से अम्माँ, ऊँचे पर चढ़ जाता।।
वहीं बैठ फिर बड़े मजे से मैं बाँसुरी बजाता।
'अम्माँ-अम्माँ' कह बंसी के स्वर में तुम्हें बुलाता।।
बहुत बुलाने पर भी माँ, जब मैं नहीं उतरकर आता।
माँ, तब माँ का हृदय तुम्हारा बहुत विकल हो जाता।।
तुम आँचल फैलाकर अम्माँ, वहीं पेड़ के नीचे।
ईश्वर से कुछ विनती करतीं बैठी आँखें मींचे।।
तुम्हें ध्यान में लगी देख मैं धीरे-धीरे आता।
और तुम्हारे फैले आँचल के नीचे छिप जाता।।
तुम घबराकर आँख खोलती, पर माँ खुश हो जातीं।
जब अपने 'मुन्ना राजा' को गोदी में ही पातीं।।
इसी तरह कुछ खेला करते हम तुम धीरे-धीरे।
यह कदंब का पेड़ अगर माँ, होता यमुना तीरे।।

मेरी बिटिया रानी

कविता

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

मैं बचपन को बुला रही थी-
बोल उठी बिटिया मेरी।
नंदन-वन-सी फूल उठी वह-
छोटी-सी कुटिया मेरी।।
'माँ ओ' कहकर बुला रही थी,
मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में कुछ लिए हाथ में
मुझे खिलाने लाई थी।।
मैंने पूछा-'यह क्या लाई'
बोल उठी वह -'माँ काओ!'
फूल-फूल मैं उठी खुशी से,
मैंने कहा-'तुम्हीं खाओ।।'

शिशु मंदिरों के लिए विशेष छूट !

वाह !
क्या झूले हैं...
कन्धारी
झूलेवाला

ईश्वरी गार्डन के सामने, राजेन्द्र नगर थाने के आगे,
ए. बी. रोड़, इन्दौर (म.प्र.)
दूरभाष: (0731)4248452 मो. 09827010585

देवेन्द्र सत्यार्थी

लोक साहित्य की गंगा को वर्तमान युग में जन जन तक पुनः प्रवाहित करने में जिनका भागीरथ प्रयत्न अतुल्य है सात उपन्यास, छः कहानी संग्रह, पांच निबंध और तीन आत्मकथाएं कई रेखाचित्र व संस्मरणों से साहित्य का आंगन लोक रचना रत्नों से जगमगाने वाले देवेन्द्र जी की कलम बच्चों के लिए भी उतनी ही आकर्षक व मर्मस्पर्शी रचनाएं दे गई।

मौसी पपीतेवाली

✦ कहानी

श्री देवेन्द्र सत्यार्थी

अमृतयान भी खूब है। हर समय यात्रा करता रहता है। देश का कोना-कोना छान मारा। विदेशों की भी खूब सैर की। बूढ़ा हो गया, पैर थकने का नाम ही नहीं लेते। इन यात्राओं में अमृतयान को तरह-तरह के अच्छे-बुरे अनुभव हुए। यह बस्तर में जो कुछ हुआ था, उसे आज तक नहीं भूल सका है अमृतयान।

आज से तिरेपन साल पहले की बात है। एक दिन अमृतयान के पास उसके एक मित्र का पत्र आया। उसका नाम था जित्तन। यह बस्तर में रहता था। जित्तन ने अमृतयान को बुलाया था-''तुम आओगे तो बस्तर के वनों में खो जाओगे। इतना सुंदर एकांत तुम्हें कहीं न मिलेगा।''

अमृतयान ने उससे पहले बस्तर नहीं देखा था। वह तुरंत चल दिया। साथ में थी पत्नी देवयानी और बेटी कविता। कुछ समय तक वह जित्तन के साथ रहा। फिर अलग रहने का इंतजाम हो गया। वह वहाँ रहकर कुछ लिखना चाहता था। एक छोटा सा खूबसूरत मकान, सामने रंग-रंग के फूलों की बगीची। फूलों पर तितलियाँ उड़तीं, चिड़ियाँ चहचहातीं।

बस्तर की सुंदरता देख-देख अमृतयान मुग्ध था। सोचने लगा, 'क्यों न इस पर कोई किताब ही लिख डालूँ।'

बस फौरन अमृतयान बस्तर के सीधे-सादे, प्यारे-प्यारे लोगों के जीवन पर एक पुस्तक लिखने में जुट गया। कई महीने बीत गए। जितना भी लिखता, लगता अभी तो और भी बहुत कुछ लिखना बाकी है। कभी-कभी उसे लगता, जैसे बस्तर के लोगों ने कोई जादू सा कर दिया है उस पर।

एक दिन की बात। अमृतयान कमरे में बैठा लिख रहा था। देवयानी और कविता आँगन में बैठी थीं। इतने में एक स्त्री पपीते बेचती हुई उधर से आ निकली, ''पपीते लो, पपीते! मीठे मिसरी से पपीते।''

पपीते मीठे थे या नहीं, यह तो नहीं पता। पर उस स्त्री की आवाज में ऐसी मिठास थी कि देवयानी और कविता

दरवाजे पर जा खड़ी हुई।

पपीतेवाली ने कविता को देखा, तो बस देखी ही रह गई। उसने कविता को गोद में उठा लिया। उसे प्यार करने लगी।

फिर छांटकर एक पपीता दिया और अपने रास्ते चलने लगी।

देवयानी पैसों के लिए बुलाती रह गई लेकिन वह स्त्री ऐसी चली गई, जेसे उसने कुछ सुना ही नहीं हो।

देवयानी ने अमृतयान को बताया, तो वह ताज्जुब करने लगा। अगले दिन फिर पपीते वाली आ गई। कविता दौड़कर बाहर गई। उसे देखकर वह प्यार से बोली–''लेगी पपीता?''

''हाँ। कल वाला बहुत मीठा था, मौसी!''

'मौसी' शब्द सुनते ही फलवाली ने फिर उसे प्यार से गोद में उठाया। चूमकर जाने लगी सहसा देवयानी ने पुकारा– ''पपीतेवाली, पैसे तो ले जा।''

पपीतेवाली ने पैसे लेने से इनकार कर दिया। बोली– ''इतनी प्यारी बेटी है आपकी। क्या उसे कोई छोटी सी चीज भी भेंट नहीं कर सकती मैं।''

बातों–बातों में उसने अपने बारे में काफी कुछ बता दिया। उसका नाम कालिंदी था। वहाँ से कुछ मील दूर, नदी पार एक गांव में रहती थी वह। दुनिया में कोई नहीं था उसका। अकेली थी। यह कहते–कहते आँखें भर आईं। लेकिन फिर जैसे उसे अपनी भूल पता चली। बोली–''नहीं, अकेली कहाँ! सभी गाँववाले तो मेरे अपने हैं। स्कूल के बच्चे भी हैं, जिनके लिए रोज ताजे पपीते लेकर जाती हूँ। और फिर कविता भी तो है, यह मेरी अपनी बेटी है।''

सुनकर देवयानी की आँखें भी भर आईं।

तब तक अमृतयान भी बाहर आ गया था। उसने भी पैसे लेने की जिद की, तो कालिंदी बोल पड़ी–''बाबूजी, आप बेकार चिंता करते हैं। मैं एक पैसा भी नहीं छोड़नेवाली। एक दिन पूरा हिसाब करूँगी, हाँ!'' अमृतयान क्या कहता, चुप रहा। इतनी सी देर में कविता कालिंदी से इस कदर घुल–मिल गई कि कालिंदी चली, तो वह भी उसके साथ चल दी। कालिंदी बोली–''ले जाऊँ बाबूजी, इसे भी अपने साथ?''

न अमृतयान मना कर सका, न देवयानी। कविता कालिंदी के साथ चली गई। शाम को कालिंदी उसे घर छोड़ती गई।

फिर तो यह रोज का ही नियम हो गया। कविता सुबह से ही नहा–धोकर, अच्छे कपड़े पहन, कालिंदी मौसी के इंतजार में बैठ जाती। ठीक समय पर पपीतों से भरी टोकरी सिर पर रखे आती दिखाई देती कालिंदी। कविता चिल्ला पड़ती, ''मौसी पपीतेवाली! मौसी पपीतेवाली!''

और फिर कलिंदी के साथ चली जाती कविता। दिन भर उसी के साथ रहती। मीठी–मीठी बातें करती, कहानियाँ सुनती।

आँधी –तूफान में भी कालिंदी का नियम कभी न टूटता। एक दिन धुआँधार बारिश हो रही थी। कालिंदी एक पुराना सा छाता लिए आ गई। अमृतयान ने पूछा–''क्या ऐसे मौसम में पपीते बेचने के लिए आना जरूरी था?''

कालिंदी एक क्षण चुप रही। फिर कहा– ''मैं न आती, तो स्कूल के बच्चे मेरी बाट देखते। बच्चों के बीच रहकर मुझे भी खुशी होती है। कविता को देखे बिना भी तो चैन कहाँ पड़ता।''

''कालिंदी, क्या लगता है तुम्हें कविता को देखकर? आज तुम्हे बताना ही होगा।''

अब कालिंदी छिपा न सकी। उसने बता दिया– बिलकुल कविता जैसी ही थी उसकी बेटी। आज से चार–पाँच बरस पहले गांव में हैजा फैला। वह उसकी चपेट में आ गई। कालिंदी का पति भी हैजे का शिकार हो गया। तब से फल बेचकर गुजारा करती है। स्कूल के बच्चों को देखकर प्यार उमड़ आता है। उसकी बेटी आज होती, तो वह भी स्कूल में पढ़ रही होती।

''बिलकुल कविता जैसी थी वह बाबूजी! गोरी, गोल मटोल!'' कहते–कहते कालिंदी की आँखों से आँसू बह चले।

इसके तीसरे दिन की बात है। कालिंदी सुबह–सुबह कविता को लेकर गई, पर शाम को नहीं लौटी। दिनभर हल्की बूँदाबाँदी होती रही। शाम होते–होते जोरों की बारिश

हो गई। आँधेरा हो गया, पर कालिंदी का कुछ पता न चला।

अमृतयान दौड़ा-दौड़ा वहाँ गया, जहाँ स्कूल के बाहर कालिंदी पपीते बेचा करती थी। एक दूकानदार से पूछा। वह बोला-पपीते वाली तो आज दोपहर को ही चली गई। उसके साथ एक छोटी लड़की थी।''

सुनते ही अमृतयान का जी धक् से रह गया। उसने आकर देवयानी को बताया। देवयानी तो रोते-रोते बेहाल हो गई। चिल्लाकर बोली-''ले गई चुड़ैल! पपीतों के पैसे नहीं लेती थी। तभी मुझे शक हुआ था। कहती न थी कि एक दिन सारा हिसाब करूँगी। कर लिया न हिसाब। न जाने मेरी फूल सी बेटी कहाँ होगी।''

''नही देवयानी, ऐसा नहीं हो सकता।'' अमृतयान समझाने की कोशिश करता, पर देवयानी पर किसी बात का असर नहीं हो रहा था।

''परदेश में हम किससे मदद माँगे? कौन ढूँढकर लाएगा हमारी बेटी को?'' कहते-कहते देवयानी की हिचकियाँ बँध गई।

अमृतयान देवयानी को धीरज बँधाते खुद रो पड़ा। रात भर पानी बरसता रहा। अमृतयान मन ही मन सोच रहा था, 'क्या पुलिस की मदद लूँ?' पर न जाने क्यों, उसे विश्वास था कि कालिंदी जरूर लौटकर आएगी।

दिन निकला। बारिश कुछ कम हो गई। अमृतयान सोच नहीं पा रहा था-वह क्या करे? तभी उसी कालिंदी की आवाज सुनाई दी, ''बाबूजी.....दीदी....।''

अमृतयान ने झट से दरवाजा खोला। देखा, सामने कालिंदी खड़ी थी। साथ में थी कविता। कालिंदी ने अपराधी भाव से कहा-''माफ कीजिए बाबूजी, आपको परेशानी हुई।''

'' हुआ क्या था? साफ-साफ क्यों नहीं बताती?'' अमृतयान ने कुछ गुस्से में कहा।

कालिंदी भीतर आ गई। बोली-''कई दिनों से कविता मेरा गाँव देखने की जिद कर रही थी। कल बारिश के कारण स्कूल की छुट्टी हो गई। मैंने सोचा, आज इसे गाँव दिखा लाऊँ। शाम को छोड़ जाऊँगी। जल्दी में आपको बताया भी नही। पर वहाँ यह बच्चों के साथ खेल-कूद में मस्त हो गई। शाम के समय लौटने के लिए कोई नाव न मिली। बारिश में नदी उफन रही थी। रात घिरने को थी। कोई मल्लाह चलने को राजी ही नहीं हुआ। मुझे मालूम था, आप परेशान होंगे, पर....।''

देवयानी कविता को छाती से चिपकाए कालिंदी की बात सुन रही थी। रात में उसने कालिंदी को बुरा-भला कहा था। इस बात का गहरा पछतावा था उसे। इसके लगभग डेढ़-दो हफ्ते बाद अमृतयान का लौटने का कार्यक्रम बन गया। सुबह-सुबह आई कालिंदी, तो कविता चिल्लाई ''पपीते वाली मौसी, पपीते वाली मौसी! आज हम जा रहे हैं।''

कालिंदी भीतर आई, तो उसके चेहरे पर दुःख की छाया थी। पूछने लगी-''क्या सचमुच बाबूजी, आप चले जाएँगे?''

अमृतयान बोला-''हाँ कालिंदी ! किताब पूरी हो गई। अब जाना ही होगा। तुम्हारे बारे में भी लिखा है किताब में।''

कालिंदी कविता को गोद में लेकर बैठी रही। उसके बालों में उँगलियाँ फिराती रही।

अचानक देवयानी को कुछ याद आया। बोली-''कालिंदी, अब तो पपीतों के पैसे बता दो।'' अमृतयान ने भी जिद की। कालिंदी का चेहरा तमतमा उठा। बोली-''बाबूजी, पैसे देने ही हैं, तो केवल पपीतों के क्यों? उन कहानी-किस्सों के भी पैसे दो, जो मैं माँ की तरह उस पर लुटाती रही।'' कहते-कहते कालिंदी सुबकने लगी।

अमृतयान को अपनी गलती पता चली। धीरे से बोला-''माफ करना कालिदी। प्यार-दुलार की कीमत दुनिया में कोई नहीं चुका सकता।''

कालिंदी ने एक ताजा, बड़ा सा पपीता कविता को पकड़ाया। बोली-''याद रखोगी न बेटी, अपनी पपीते वाली मौसी को!''

कविता भी उदास थी। बोली कुछ नहीं।पर उसकी आँखें कह रही थी, 'हाँ मौसी, जरूर!'

कालिंदी टोकरी उठाकर चली गई। अमृतयान उसे जाते हुए देखता रहा। वहा जानता था कि कालिंदी रो रही

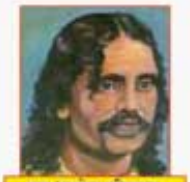
बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

१८४३ से हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल आरंभ होता है। तब से ही खड़ी बोली साहित्य की भाषा मान्य होने लगी। इस युग के अग्रणी साहित्यकार थे स्वनामधन्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र। यह वह काल था जब बाल साहित्य की स्वतंत्र पहचान अंकुरित होने लगी थी। अंधेर नगरी चौपट राजा उस समय की अंग्रेजी सत्ता को ललकारती रचना थी। इस नाटक के मनोरंजक गीत जो बच्चों की जुबान पर चढ़े रहते थे।

चूरन का लटका

ये लटके बाबू भारतेन्दु हरिशचन्द्र के सुप्रसिद्ध नाटक अंधेर नगरी का अंश है।

चूरन अमल वेद का भारी
जिसको खाते कृष्ण मुरारी।
चूरन पाचक है पचलोना
जिसको खाता श्याम सलोना।
चूरन बना मसालेदार
जिसमें खट्टे की बहार
मेरा चूरन इसका नाम
बिलायत पूरन इसका काम
चूरन अमले सब जो खावे
दूनी रिश्वत तुरंत पचावे
चूरन साहब लोग जो खाता
सारा हिन्द हजम कर जाता।

चने का लटका

✦ कविता

बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

चना बनावे घासी राम
जिसकी झोली में दुकान।
चना चुर मुर चुर मुर बोले
बाबू खाने को मुँह खोले।
चना खावे तोकी मैना
बोले-अच्छा बना चबैना।
चना खाय गफूरन मुन्ना
बोले और नहीं कुछ सुन्ना।
चना खाते सब बंगाली
जिनकी धोती ढीली ढाली।
चना खाते मियां जुलाहे
दाढ़ी हिलती गाह बगाहे।
चना हाकिम सब जो खाते
सब पर दूना टिकिस लगाते

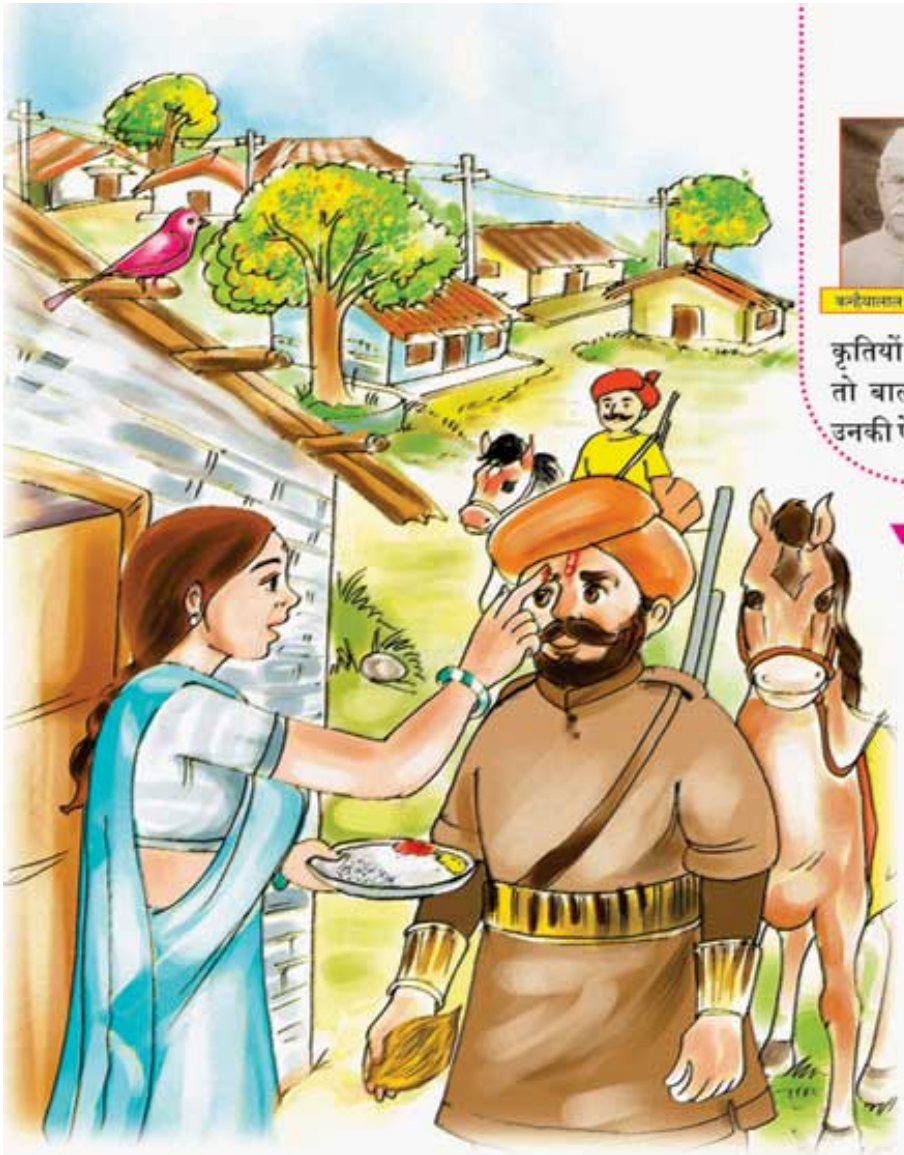

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

श्री प्रभाकर आधुनिक हिन्दी युग के अमिट हस्ताक्षर हैं। 'नई पीढ़ी नए विचार', 'जिन्दगी मुस्काई', 'माटी हो गई सोना', 'आकाश के तारे धरती के फूल' जैसी बड़ों की पठनीय गंभीर कृतियों के रचनाकार ने जब बच्चों की सृष्टि में प्रवेश किया तो बालमन की गहराई में उतरते गए। यहाँ आप पढ़ेंगे उनकी ऐसी ही मन को छू लेने वाली बालकथा।

चावल के छर्रे

✦ कहानी

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

सुल्ताना डाकू को मरे बरसों बीत गए, पर उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में अब भी हर आदमी को उसका नाम याद है। जब वह जीवित था, लोग उससे भूत की तरह डरते थे।

सुल्तान का डाका डालने का तरीका भी निराला था। वह डाका डालने से कई दिन पहले उस गाँव में, जिसमें डाका डालना होता था, खबर भेज देता था कि मैं अमुक दिन डाका डालने आऊँगा और ठीक उसी दिन वह आ कूदता था।

एक बार उसने एक गाँव में डाका डालने की खबर भेजी। गाँव बड़ा था। उसके निवासी भी मजबूत थे। उन्होंने यह इंतजाम किया कि सब लोग उस दिन अपने-अपने काम बंद रखें और जब सुल्ताना आए, तो बंदूकवाले अपनी छत पर से बंदूक चलाएँ। एक मकान गाँव में जरा बाहर था। उसमें एक किसान अपनी पत्नी के साथ रहता था। समय की बात है कि पति बाहर गया हुआ और घर में अकेली पत्नी थी। गाँववालों की सलाह उसने न मानी।

ठीक तारीख पर सुल्ताना अपने दल के साथ पहुँचा। उसका रास्ता भी उस अकेले मकान की तरफ से था। मकान खुला हुआ था और उसके द्वार पर वह स्त्री

खड़ी थी। सुल्ताना ने कड़ककर पूछा–''तू यहाँ क्यों खड़ी है?''

स्त्री ने निर्भयता से कहा–''भाई, तेरा इंतजार कर रही हूँ।''

सुल्ताना हँस पड़ा– ''तू मेरा इंतजार क्यों कर रही है?''

स्त्री ने शांति से उत्तर दिया–''भाई, आज का दिन ही इंतजार का है।''

सुल्ताना कुछ मतलब नहीं समझा, पर उस स्त्री की तरफ बढ़ा और उसने देखा, स्त्री का आँगन गोबर से लिपा हुआ है और चौकी पर एक थाल में रोली, चावल, लड्डू और नरियल रखा हुआ हैं। सुल्ताना ने पूछा– ''यह सब यहाँ क्यों रखा हैं?''

स्त्री ने कहा– ''तुम्हें पता नहीं, आज कार्तिक शुक्ल द्वितीया है–भैया दूजा। हर बहन अपनी भाई के मस्तक पर तिलक लगाती, मिठाई खिलाती और नारिलय भेंट करती है।'' सुल्तान भौंचक रह गया। उसने कहा– ''पगली, मैं तो डाकू हूँ और तुम्हारे गाँव को लूटने आया हूँ।''

बड़ी बेफिक्री से स्त्री ने कहा– ''होंगे डाकू और आए होंगे लूटने, पर आज के दिन तो जो द्वार पर आता है वह भाई ही होता है।'' और उसने सुल्ताना के मस्तक पर तिलक किया।

सुल्ताना ने कुछ सोचा और तब उसकी जेब से जितने रुपए थे, निकालकर थाल में रख दिए। कहा– ''बहन, सुल्ताना बंदूक की गोलियों से नहीं डरता, पर तूने उसे अपने चावल के छर्रों से हरा दिया।'' सुल्ताना ने अपने साथियों को कहा–''सब जगह ऐलान कर दो कि कोई चोर–डाकू इस गाँव में न आए, क्योंकि यह सुल्ताना की बहन का गाँव हैं।''

●●●

(लोकार्पण)
एकनाथ जी पर रोचक चित्रकथा

कन्याकुमारी। सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार एवं देवपुत्र के प्रबंध सम्पादक डॉ. विकास दवे द्वारा लिखित एवं प्रसिद्ध चित्रकार श्री वेणु वेरियाथ द्वारा चित्रित विवेकानंद स्मारक कन्याकुमारी के कल्पक श्री एकनाथ रानडे की महान प्रेरक कार्यशैली एवं जीवन पर प्रकाश डालती बहुरंगी रोचक चित्रकथा का लोकार्पण श्री बालकृष्ण जी (उपाध्यक्ष, विवेकानंद केंद्र) एवं श्री भानुदास जी (महासचिव, विवेकानंद केंद्र) द्वारा किया गया है। यह चित्रकथा अंग्रेजी एवं हिन्दी में प्रकाशित हो चुकी है एवं १७ अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशन शीघ्र ही प्रस्तावित है। चित्रकथा का प्रकाशन विवेकानन्द केंद्र द्वारा किया गया है। इसे देश भर के विवेकानन्द केन्द्र के कार्यालयों से २० रु. में प्राप्त किया जा सकता है।

हरिवंशराय बच्चन

भारत सरकार से पद्मभूषण से अलंकृत कविवर बच्चन ने अपने पुत्रों अमिताभ बच्चन और अजिताभ के बहाने बच्चों के लिए भी सुमधुर रचनाएं रचीं। जितनी मस्ती बड़ों को 'मधुशाला' से मिलती है, 'मधुकलश' और 'निशानिमंत्रण' या 'मधुबाला' में जैसी रंजक रसमयिता है उनका बालकाव्य बच्चों से मानसिक स्तर के अनुरूप वैसा ही खरा उतरता है।

✦कविता

श्री हरिवंशराय बच्चन

तारे

माँ जब सूरज ढल जाता है
अँधियारा छा जाता है,
आसमान में जग-मग, जग-मग
दीवे कौन जलाता है?

रात बीतने पर, सपनों की,
जो सूरज चमकाता है,
जो सोने-चाँदी की किरनें
धरती पर फैलाता है।

वह, जब सूरज ढल जाता है
अँधियारा छा जाता है,
आसमान में जग-मग, जग-मग
दीवे लाख जलाता है।

चिड़िया का घर

✦कविता

श्री हरिवंशराय बच्चन

चिड़िया, ओ चिड़िया,
कहाँ है तेरा घर?
उड़-उड़ आती है
जहाँ से फर-फर!
चिड़िया, ओ चिड़िया,
कहाँ है तेरा घर?
उड़-उड़ जाती है
जहाँ से फर-फर!
बन में खड़ा है जो
बड़ा सा तरुवर
उसी पे बना है
खर पातों वाला घर!
उड़-उड़ जाती हूँ
वहीं को फर-फर!

मैथिलीशरण गुप्त

भारत भारती के यशस्वी कवि श्री मैथिलीशरण जी की प्रतिष्ठा हिन्दी साहित्य में अक्षुण्ण रहेगी। 'भारती भारती' के ये रचयिता राष्ट्रकवि कहलाए। उनकी बच्चों के लिए लिखी रचनाएं बाल साहित्य का अलंकरण है यद्यपि उनका बाल साहित्य पर पृथक से कोई संकलन प्रकाशित नहीं है पर स्फुट रचनाओं से उनकी दृष्टि में बाल साहित्य महत्वपूर्ण क्षेत्र था यह भली भांति प्रमाणित होता है।

सरकस

✦ कविता

श्री मैथिलीशरण गुप्त

होकर कौतूहल के बस में,
गया एक दिन मैं सरकस में।
भय-विस्मय के खेल अनोखे,
देखे बहु व्यायाम अनोखे।
एक बड़ा सा बंदर आया,
उसने झटपट लैम्प जलाया।
डट कुर्सी पर पुस्तक खोली,
आ तब तक मैना यों बोली।
''हाजिर है हजूर का घोड़ा,''
चौंक उठाया उसने कोड़ा।
आया तब तक एक बछेरा,
चढ़ बंदर ने उसको फेरा।
टट्टू ने भी किया सपाटा,
ट्टी फाँदी, चक्कर काटा।
फिर बंदर कुर्सी पर बैठा,
मुँह में चुरट दबाकर ऐंठा।
माचिस लेकर उसे जलाया,
और धुआँ भी खूब उड़ाया।
ले उसकी अधजली सलाई,
तोते ने आ तोप चलाई।
एक मनुष्य अंत में आया,
पकड़े हुए सिंह को लाया।
मनुज-सिंह की देख लड़ाई,
की मैंने इस भाँति बड़ाई-
किससे साहसी जन डरता है,
नर नाहर को वश करता है।
मेरा एक मित्र तब बोला,
भाई तू भी है बम भोला।
यह सिंही का जना हुआ है,
किन्तु स्यार यह बना हुआ है।
यह पिंजड़े में बंद रहा है,
नहीं कभी स्वच्छंद रहा है।
छोटे से यह पकड़ा आया,
मार-मार का गया सिखाया।
अपने को भी भूल गया है,
आती इस पर मुझे दया है।

• • •

बच्चो ! जो कुछ हम देखते हैं वह सब कुछ अच्छा ही नहीं होता उसमें से कई बातें बुरी भी होती हैं। जैसे सरकस का बंदर चुरट पीता है निश्चित रूप से इसे सरकस में देखा गया होगा पर यह बहुत बुरी बात है।

किसी भी प्रकार का धूम्रपान करना कैंसर सहित भयंकर बीमारियों का कारण बनकर जानलेवा हो सकता है।

गजनन्दन लाल रेल के

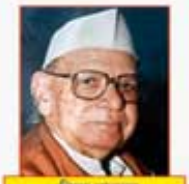
विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर आधुनिक हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ रचनाकारों में स्मरणीय हैं अनेक अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय प्रतिष्ठित सम्मानों एवं अलंकरणों से विभूषित श्री विष्णु प्रभाकर जी ने बच्चों के लिए लेखनी चलाई तो बच्चों को विमोहित करने वाली रचनाएं दीं। गजनंदन लाल उनका बच्चों के लिए रचित एक विशेष पात्र है। इस कहानी में आनन्द लीजिए गजनंदन लाल के साथ रेलयात्रा का।

इस बार गजनन्दन लाल के स्कूल से बारह विद्यार्थियों का एक दल दक्षिण की यात्रा पर निकला। साथ में दो अध्यापक थे। गजनन्दन लाल तो थे ही। हाथी का बच्चा कहो या गणेश ही कहो, थे वे बड़े काम के। हँसने-हँसाने का काम तो करते ही थे। मुसीबत पड़ने पर उसे बड़ी आसानी से दूर भी कर देते थे।

हुआ क्या? सफर में एक बार सीटों का आरक्षण नहीं हो सका। दिन का सफर था। सोचा, मिलजुल कर तय कर लेंगे। विद्यार्थियों को देखकर कोई न कोई बैठने की जगह दे ही देगा। पर उस दिन भीड़ सी भीड़ थी। आदमी पर आदमी चढ़ा आ रहा था। करे तो क्या करे। हंसमुख गजनन्दन लाल ने बहुत हाथ-पैर जोड़े पर उसे तो कोई पास भी नहीं फटकने देता था। विद्यार्थी और अध्यापक सब परेशान लेकिन गजनन्दन लाल उसी तरह हँसे जा रहे थे। बोले-''जरा घबराइए मत। मैं अभी इंतजाम करता हूँ।''

और वह झट कूदकर ऊपर की बर्थ पर चढ़ने वाली सीढ़ी पर खड़े हो गए। उसका ऐसा करना था कि नीचे बैठे आदमी चिल्ला उठे-''क्या करते हो, क्या करते हो।''

''बाप रे! हाथी का बच्चा ऊपर की बर्थ पर बैठेगा। न-न तब तो बर्थ समेत वह हमारे ऊपर आ गिरेगा...''

बस तुरंत सबने आँखों ही आँखों में एक-दूसरे को देखा। थोड़ा-थोड़ा खिसके और गजनन्दन नीचे कूद पड़े। थोड़ी ही देर में उनका पूरा दल बैठ चुका था। और कहकहे लगा रहा था।

चलते-चलते वे त्रिचनापल्ली पहुँचे। खूब घूमे। जहाँ भी वे जाते, गजनन्दन लाल को देखने भीड़ इकट्ठी हो जाती। होटल हो या मंदिर, फैक्टरी हो या नदी का किनारा, सब कहीं हँसी-खुशी का वातावरण बन जाता। वहाँ एक मंदिर है चट्टान के ऊपर। बहुत सुन्दर, उसे न देखा तो कुछ न देखा। उनका दल भी पहुँचा उसे देखने। गजनन्दन धीरे-धीरे चढ़ रहे थे। हाँफ भी रहे थे। ऊपर पहुँचे तो मंदिर बन्द हो चुका था।

अब !!

तभी हाँफते-हाँफते गजनन्दन पुजारी के पास पहुँचे। बोले-''पुजारी जी! आपके सबसे बड़े देवता सुब्रह्मण्यम स्वामी महाराज हैं न!''

पुजारी ने गजनन्दन को देखा, मुस्कराए। बोले-''हाँ हैं। पर तुम कौन हो?''

''मुझे नहीं पहचानते। मैं उनका छोटा भाई हूँ गणेश।''

पुजारी और उनके साथी खूब हँसे। कहा-''कुछ-कुछ लगते तो हो। क्या चाहते हो?''

मंदिर में भगवान जी के दर्शन करना चाहते हैं हम।

पर अब तो भगवान के सोने का समय

✦ हास्य कथा

श्री विष्णु प्रभाकर

सफर में

है।'' ''भगवान का सोने का समय। हूँ... अब समझा, यह सब जगह गड़बड़ क्यों मची हुई है। आप भगवान को सुला देते हैं। मैं भइया से शिकायत करूँगा।''

पुजारी खूब हँसे। खूब हँसे और मंदिर का द्वार खोल दिया। सबने खूब दर्शन किए, प्रसाद पाया और पुजारी जी को भी दक्षिणा देकर प्रसन्न किया।

वहाँ से चलते समय फिर एक समस्या

पैदा हो गई। वे स्टेशन से बहुत दूर हिन्दी प्रचार सभा में ठहरे थे। गाड़ी जाती थी बहुत सवेरे–सवेरे। वहाँ वाहनों की कमी थी। बैलगाड़ी थी या थी टैक्सी। सवेरे–सवेरे बड़ी मुश्किल से एक टैक्सी मिली। दो बार में ही वह उन्हें ले जा सकती थी। लेकिन तब तक तो गाड़ी चल देगी...

''तो क्या करें?''

गजनन्दन बोले–''कुछ नहीं, बस मुझे पहले जाने दीजिए। गाड़ी मिलेगी।''

परेशानी में भी इस मिलेगी शब्द पर मास्टर साहब हँस पड़े। बोले–''कैसे मिलेगी, मैं भी तो सुनूँ।''

''मैं जाकर गाड़ी के ऊपर खड़ा हो जाऊँगा। मजाल कि वह एक इंच भी सरक पाए। आप सबके आने पर ही उतरूँगा।''

मास्टर जी जानते थे कि और कोई रास्ता नहीं है। गजनन्दन की बात माननी होगी। तो पहले ट्रिप में गजनन्दन स्टेशन पहुँचे। गाड़ी सीटी दे रही थी। गार्ड के हाथ में हरी झण्डी थी। उसने उसे ऊपर उठाया ही था कि वातावरण में एक तेज आवाज गूँज उठी– ''ठहरिए!''

चकित–विस्मित गार्ड ने आवाज की दिशा में देखा–''हाथी का एक बच्चा सीढ़ियों पर से लुढ़कता हुआ उनकी ओर आ रहा है। पास आने पर उसने हाँफते–हाँफते कहा– ''गार्ड अंकल, मैं गजनन्दन लाल हूँ। दिल्ली का एक विद्यार्थी, हाथी का बच्चा।''

गार्ड भी खुशदिल था, मुस्कराकर बोल–''हो तो तुम सचमुच हाथी के बच्चे पर तुम्हारी सूँड कहाँ गई।''

''मेरी सूण्ड।'' गजनन्दन ने तुरंत उत्तर दिया– जहाँ आपकी पूँछ गई। गार्ड अंकल जी हाँ कहते हैं न कि आदमी बन्दर की औलाद है। आपकी पूँछ घिस गई। मेरी सूँड भी घिस गई।''

गार्ड गजनन्दन की इस वाक्चातुरी पर खूब हँसे, बोले–''क्या चाहते हो?''

''बस 'गार्ड अंकल' आप पाँच मिनिट के लिए गाड़ी रोक दो मेरे साथी पीछे आ रहे हैं। दक्षिण की यात्रा पर हैं।''

''पर भाई, समय तो हो गया।''

''कैसे हो गया अंकल। गणेश की पूजा कहाँ की आपने। उसकी पूजा के बिना कोई काम हो ही नहीं सकता।''

गार्ड ने स्थिति को समझा। मन ही मन वह गजनन्दन से बहुत खुश थे। उन्होंने गाड़ी रोक दी। गार्ड को विशेष अवस्था में गाड़ी रोक देने का अधिकार होता है।

गजनन्दन ने गार्ड को नमस्कार किया और आगे की यात्रा उसने उन्हीं के डिब्बे में पूरी की। सारे रास्ते वह उनसे गाड़ियों के नामों को पूछता रहा। हाँ, बीच–बीच में हँसना–हँसाना नहीं भूलता था।

आज भी वह अपने गार्ड अंकल को पत्र लिखता है।

अमृतलाल नागर

मुंशी प्रेमचन्द के बाद हिन्दी साहित्य के दिग्गज उपन्यासकार एवं उस्ताद कहानीकार हैं अमृतलाल नागर। तुलसीदास, सूरदास, चैतन्य महाप्रभु की काल के पेट में दबी जीवनियाँ आपकी लेखनी से उपन्यासों के रूप में जीवंत हुई और समाज में पुनर्प्रतिष्ठित हुई। बच्चों के लिए कलम चलाते हुए नागर जी एकदम बच्चों जैसी सरल सहज उन्मुक्त भावभिव्यक्तियों से बालमन में पैठ करने का कौशल दिखाते हैं। नटखट चाची पढ़कर आप आश्चर्य करेंगे समाज की गंभीर समस्याओं पर पूरी जीवटता से लिखने वाला समाज और इतिहास का यह कलम प्रहरी बाल साहित्य का भी कैसा सफल साधक रहा है।

नटखट चाची

✦ हास्य कथा

अमृतलाल नागर

भाई, यह तो तुम्हें भी मालूम होगा कि गलती इंसान से ही होती है, हैवान से नहीं। और जरा देर के लिए यह भी समझ लो कि मैं भी एक इंसान ही हूँ। बस, इसी वजह से मैं भी गलती कर बैठा– चाचा को चोर समझ लिया, हालाँकि खता चाचीजी की ज्यादा थी।

'बाल विनोद' के होलिकाँक में उम्र जानने की तालिका निकली थी। अगरा जरा कोशिश करो, तो तुम्हें मालूम हो जाएगा कि बीस वर्ष पहले मेरी उम्र वही थी, जो आज तुम्हारी है। पिताजी मरते समय मुझे बजाय किसी अनाथालय में दान करने के, चाचा को सौंप गए थे और चाचा साहब ने मुझे चाची के हाथों सौंप दिया।

मेरे चाचा के घर आने के बाद ही चाची ने नौकर को झाड़ मारकर निकाल दिया, और मुझे तीन काम सौंपे– सवेरे उठकर मण्डी से तरकारी लाना, इसके बाद उनके गोदीवाले बच्चे को खिलाना और फिर मार खाना। ये तीनों काम मैं रोज बिना किसी हीले–हवाले के कर लिया करता था। इसी से मेरी चाची अक्सर प्रसन्न होकर मुझे बड़े प्रेम से खाने के लिए गालियाँ दिया करती थीं।

हाँ, एक काम उन्होंने मुझे और सौंपा। बात यों हुई कि एक दिन चाचीजी पड़ोस में किसी के घर पचास ताले टूटने की बात सुन आई थीं। आकर उन्होंने मुझसे कहा–''रमेश तू दिन–पर दिन बड़ा कामचोर और निखट्टू होता चला जा रहा है। दिन–भर सिवा खेलने–कूदने और दंगा करने के तुझे और कोई भी काम नहीं। आज से रात में किताब लेकर बैठा कर। और, जो तू किसी दिन भी बारह बजे से पहले सोया, तो तेरी हड्डी–पसली तोड़ दूँगी। समझा?'' इसके बाद चाचीजी ने बड़ी दया करके मेरे दोनों कान अच्छी तरह हिला दिए, जिससे मैं उनकी बात अच्छी तरह समझ जाऊँ।

चाचीजी फिर कहने लगीं–''और सुन, जरा आँख खोलकर। आज–कल चोरों का बड़ा हुल्लड़ है। अभी–अभी पड़ोस में सुनकर आई हूँ, केदारनाथ के घर चोरों ने पचास ताले तोड़े थे। सुना?''

सुन तो खैर लिया, मगर एक बात समझ में न आई–आँखें खोलकर पढ़ने और चोरों के हुल्लड़ में आखिर क्या संबंध था। बहरहाल, जो भी हो, उस वक्त मुझे अच्छी तरह याद है, पढ़ने–लिखने की बात तो दरकिनार रही, दिमाग चोरी की बात सोचने में उलझ गया। बहुत सी बातें दिमाग में चक्कर काट गईं।

तेल अधिक खर्च हो, इस ख्याल से चाचाजी ने लालटेन जरा धीमी कर मुझे पढ़ने की आज्ञा दी। ऐसी हालत में मेरे लिए सचमुच ही आँखें खोलकर पढ़ना बहुत जरूरी हो गया था।

चाची चारपाई पर पड़ी सुन रही थी। जरा घुड़क कर उन्होंने पूछा–''इसके माने।''

उनकी बात काटकर मैंने घबराई हुई आवाज में कहा–''इसके माने चाची, सी–ए–टी–कैट माने

बिल्ली, चाची।''

मारे गुस्से के चाची चुकन्दर हो गई। कहने लगीं–''अरे, तुझे मैं मना कर रही हूँ कि इसके माने मत याद कर। जो कहीं मुनुआ सुन लेगा तो रात–भर नहीं सोएगा। मगर तू ऐसा गधा है कि मानता तक नहीं।''

क्या करता, चुप हो गया। मगर मन ही मन पढ़ते–पढ़ते धीरे–धीरे नींद आने लगी। जरा ऊँघ गया।

पता नही, कब तक ऊँघता रहा। मगर एकाएक अपनी पीठ पर धमाके की आवाज सुन आँखें खुल गईं। एक हाथ से पीठ सहलाते हुए मैंने पढ़ना शुरु किया– ''एस ऊँ ऊँ ऊँ।''

खोपड़ी पर खड़ी हुई चाचीजी उस समय मुझे पूरे ढाई हाथ की देवी मालूम पड़ रही थी। पीठ पर इस कदर जोर से घूँसा पड़ा था कि हड्डी पसली तक तिलमिला गई थी। आँखों से आँसू निकल रहे थे।

चाची जी कहने लगीं– अँधे, इसीलिए तुझे पढ़ने बिठाया था? अभी ऊपर से कोई चोर–चोर''

हलक सूखने लगा। रोना भूल गया। सारे बदन में कपकपी होने लगी। मेरी घिग्घी–सी बँध गई। एकाएक मार खाने और नींद खुल जाने के कारण पहले से ही चौंका हुआ था। चाची की सूरत देखकर यों ही बुखार–सा चढ़ने लगता था, और इस वक्त ऊपर से चोर की बात सुनकर मेरी हालत एकदम अजीब हो गई। डरते हुए जो जरा छत की तरफ निगाह दौड़ाई, तो चट से चाची के पैरों से लिपट गया।

चाची भी घबरा उठीं। पूछने लगीं– ''क्या हुआ?''

मेरी जुबान ही सट गई थी। जवाब देते न

ब न पड़ा। बस लिपटा ही रहा। चाची ने झुँझलाकर अपने पैर छुड़ाते हुए पूछा–''क्या है रे?''

उनके पैरों से और भी अधिक लिपटते हुए मैंने धीरे से कहा–''चाची चो....।''

चाची के देवता कूच कर गए। घबराकर धीरे–धीरे कहने लगीं–''क्–क्–क्या...''

मैंने तो अपनी आँखें बन्द कर लीं और शायद चाची ने भी अपनी आँखें बन्द कर ली थीं।

किसी तरह काँपते हुए गले से आवाज निकालकर चाची ने कहा–''र–र–रमेश।''

मैंने उसी तरह कोशिश कर कहना चाहा–''चाची, चोर।''

मगर घिग्घी बँध गई। मुँह से केवल निकला–''ई–ई–ई।''

अब चाची ने मुझे अच्छी तरह अपनी छाती से चिपटाकर कहना शुरु किया– ''ई–ई–ई''

हम दोनों एक दूसरे से चिपटे हुए काँप रहे थे।

मुँह से चोर–चोर कहकर हम लोग मुहल्ले भर को जगाकर इकट्ठा करना चाहते थे, मगर घिग्घी बँध जाने के कारण मुँह से 'ई–ई–ओ–ओ' के सिवा और एक शब्द भी न निकलता था।

चचा ऊपर सोया करते थे। इतनी ताब भी गले में न थी कि उन्हें आवाज देते। बस, जितना अधिक डर लगता था, उतनी ही तेजी से 'ई–ई।' का राग अलापने लगता था और, चाची की यह कैफियत थी कि मैं जितना डरता था, चाची उससे चौगुना खौफ

खाती थीं। मेरा पाँच वर्ष का चचाजाद[1] भाई चौंककर जाग पड़ा, और हम लोगों की यह दशा देखकर बुक्का फाड़कर रो उठा।

रोने में मुनुआ ने बी.ए. पास किया था। जब वह रोना शुरु करता, तो कम से कम तीन घंटे तक तरह–तरह से राग अलापता रहता और पास–पड़ोस के लोगों की नींद हराम कर देता।

''क्या है? यह तुम लोग क्या कर रहे हो?''

चाची मुझे छोड़ एकदम उधर जा चिपटी। मैंने चाची की टाँग पकड़ी। मुनुआ भी उनसे चिपटकर चीखने लगा।

भाई, अगर तुम लोग कहो, तो आज तुम्हारे सुर में सुर मिलाकर हँस लूं। मगर उस दिन तो, सच यह है कि डरते–डरते पसीना छूटने लगा था।

''अरे! यह क्या करती हो? मेरी जान लोगी क्या?''

मगर वहाँ अपनी धुन में कौन किसी की सुनता है। चाची और जोर से चिपट गईं, और इतनी चिपटीं कि लिए–दिए धम से जमीन पर गिर गईं।

''हाय राम रे! अरे मरा रे! अरे मुझे छोड़ो!! ओ रमेश, अपनी चाची को उठा भाई।''

अब जरा कुछ होश आया। डरते–डरते आँखें खोलकर देखा। चचा जमीन पर पड़े हुए थे। चाची उन्हें कसकर दबाए हुए थीं। चचा चीख रहे थे, चाची–'ई–ई' कर रिरिया रही थीं।

उस दिन बुरी तरह चचा का कचूमर निकल गया। चाची के डील–डौल को देखते हुए चचा उनके मुकाबले में डेढ पसली के ठहरते थे।

जब जरा तबीयत सावधान हुई, तब राज खुला। बात यह थी कि मुनुआ के रोने की आवाज जब सोते में चचा के कान में पड़ी, तो नीचे उसे चुप कराने की गरज से उतरे। मगर नीचे आकर जो यह माजरा देखा, तो चाची को झिंझोकर पूछा। चाची उस समय बेहद डरी हुई थीं। आँखें उनकी बंद थीं, और उनके दिमाग में उस समय सिर्फ चोर की ही धुन समा रही थी। वह चचा को चोर समझ बैठी। उसके बाद तो फिर आव देखा न ताव, धमककर चचा के ऊपर चढ़ बैठीं।

और, मेरी कैफियत यह है कि जिसे मैं चोर समझ बैठा था, वह असल में छत की दीवार के ऊपर बना हुआ छोटा गुम्बद था, जिस पर टाट पड़ा हुआ सूख रहा था।

इसलिए गलती दोनों की थी। बल्कि यदि चाची की आत्मा इस समय स्वर्ग में बैठी हुई बुरा न माने, तो कहूँ कि ज्यादा गलती उन्हीं की थी। दिनभर चोर–चोर कह कर मुझे डराती रहीं, रात में भी डराया, और उसके बाद चचा को ही चोर समझकर चोट पहुँचाई। मगर मार मैंने ही खाई। चाची ने भी मारा और चचा ने भी।

बच्चो, तुमसे क्या कहूँ, उस दिन मैंने इतनी मार खाई होगी कि यदि मेरी माँ होती, तो बदन–भर में हल्दी–चूने का लेप लगाकर मुझे आराम पहुँचाने की कोशिश करती।

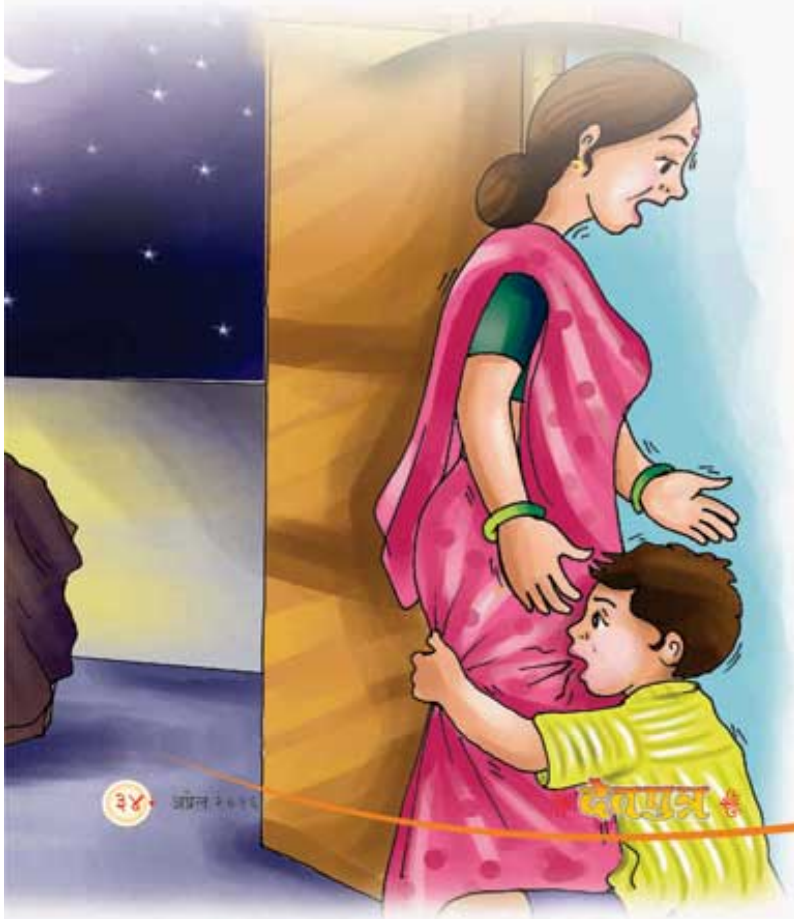

१ चचाजाद=चचेरा

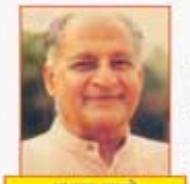
प्रभाकर माचवे

हिन्दी साहित्य में एक सुपरिचित नाम है प्रभाकर माचवे। आकाशवाणी से सतत जुड़े रहे और साहित्य की झोली भरते रहे। बच्चों के लिए उनकी रचनाएं प्राप्त होती है जो प्रौढ़ साहित्यकारों की दृष्टि में बाल साहित्य का महत्व रेखांकित करती हैं।

चाँद

✦ कहानी

श्री प्रभाकर माचवे

चंदा मामा, अब हम तेरा घर भी जान गए।
अब वो गप्पें नहीं चलेंगी
बुढ़िया-चरखा,
हिरन-रेंडियर
या स्याही का धब्बा।
अब तेरी क्या दाल गलेगी
गोल हो गया डब्बा।
चंदा मामा, अब हम तेरा तेवर पहचान गए।
नहीं रहे तुम अब मामाजी,
दूर देश के गोल-गोल लामा जी।
नहीं रहे अब नन्हे-मुन्ने,
जाओ पहन लो भी कुर्ता-पजामा जी।
चंदा मामा! अब हम तेरा जादू सारा जान गए।।

बाल साहित्य सृजनपीठ, इन्दौर द्वारा प्रकाशित

५७२ पृष्ठों में ५६० बाल साहित्यकारों का सचित्र परिचय

बृहद बाल साहित्यकार कोश

(मात्र २५०+३० डाक खर्च में उपलब्ध है।)

कोश मँगाने के लिए बाल साहित्य सृजनपीठ इन्दौर के नाम से चेक/ड्राफ्ट/मनिऑर्डर निम्न पते पर भेजिए।

बाल साहित्य सृजनपीठ, इन्दौर

४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

दूरभाष (०७३१) २४००४३९

रामधारी सिंह दिनकर

'संस्कृति के चार अध्याय' ग्रंथ के लेखक दिनकर जी आधुनिक हिन्दी जगत में दिनकर बन ही चमके। गंभीर एवं ओजपूर्ण काव्य के रचनाकार दिनकर ने 'मिर्च का मजा', 'सूरज का ब्याह', 'धूप छाँह', 'चित्तौड़ का साका' और 'भारत की सांस्कृतिक' कहानी जैसे संकलनों में अपनी बाल साहित्य रचना की प्रतिभा का प्रभावी परिचय दिया है। प्रस्तुत नाटक किशोरों के लिए विशेष बोधक एवं रोचक है।

मगध महिमा

✦ कहानी

रामधारी सिंह 'दिनकर'

पात्र

कल्पना, प्रमुख सभासद
इतिहास, चाणक्य
सात नागरिक, सेल्यूकस, चंद्रगुप्त

दृश्य– प्रथम

(नालंदा का खंडहर। गैरिक वसन पहने हुए कल्पना खंडहर के भग्न प्राचीरों की ओर जिज्ञासा से देखती हुई गा रही है।)

कल्पना – यह किस तापस की समाधि है?
किसका यह उजड़ा उपवन है?
ईंट ईंट हो बिखर गया यह,
किस रानी का राजभवन है?
यहाँ कौन है, रुक रुक जिसको
रवि–शशि नमन किए जाते हैं?
जलद जोड़ते हाथ और
आंसू का अर्घ्य दिए जाते हैं।
प्रकृति यहां गंभीर खड़ी,
किसकी सुषमा का ध्यान रही कर?
हवा यहां किसके वंदन में,
चलती रुक रुक ठहर ठहर कर?
है कोई इस शून्य प्रांत में,
जो यह भेद मुझे समझा दे?
रजकण में जो किरण सो रही,
उसका मुझ को दरस दिखा दे?

(नेपथ्य में इतिहास उत्तर देता है।)

इतिहास – कल्पने ! धीरे धीरे बोल।
पग पग पर सैनिक सोता है, पग पग सोते वीर,

कदम कदम पर यहां बिछा है ज्ञानपीठ गंभीर।
यह गह्वर प्राचीन अस्तमित[1] गौरव का खंडहर है।
सूखी हुई सरित का तट यह उजड़ा हुआ नगर है
एक एक कण इस मिट्टी का मानिक है अनमोल।
कल्पना। धीरे–धीरे बोल।
यह खंडहर उनका, जिनका जग
कभी शिष्य औ' दास बना था,
यह खंडहर उनका, जिनसे
भारत–भू का इतिहास बना था।
कहते हैं पर चंद्रगुप्त को
मगध सिंधुपति सा लहराया,
राह रोकने को पश्चिम में
सेल्यूकस सीमा पर आया।
मगधराज की विजय–कथा सुन
सारा भारतवर्ष अभय हो,
विजित किया सीमा के अरि[2] को,

राजा चंद्रगुप्त की जय हो।

(पट परिवर्तन)

दृश्य– द्वितीय

(मगध की राजधानी का राजपथ। जहाँ तहाँ फूलों के तोरण और वंदनवार सजे हैं। ठौर ठौर पर मंगल कलश रखे हुए हैं। सड़क के दोनों ओर के महल भी सुसज्जित दिखते हैं। रास्ते पर नागरिक आनंद की मुद्रा में आ–जा रहे हैं। नागरिकों का एक दल गाता हुआ प्रवेश करता हैं।

सब– जय हो, चद्रगुप्त की जय हो।

पहला– जय हो उस नरवीर सिंह की, जिसकी शक्ति अपार,
जिसके सम्मुख कांप रहा थर–थर सारा संसार।
मोरिय वंश अजय हो।

सब – चंद्रगुप्त की जय हो।

दूसरा – जय हो उसकी, हार खड़ा जिसके आगे यूनान,
जिसका नाम जपेगा युग–युग सारा हिन्दुस्तान।
दिन दिन भाग्य उदय हो।

सब– चंद्रगुप्त की जय हो।
जय हो बल विक्रम निधान की,
जय हो भारत के कृपाण की,
जय हो, जय हो मगधप्राण की।
सारा देश अभय हो,
चंद्रगुप्त की जय हो।

तीसरा – गली गली में तुमुल रोर[3] है, घर घर चहल पहल है,
जिधर सुनो, बस उधर मोद–मंगल का कोलाहल है।

चौथ– घर घर में, बस एक गान है, सारा देश अभय हो।
घर घर में, बस, एक गाना है, सारा देश अभय हो।
घर घर में, बस , एक तान है, चंद्रगुप्त की जय हो।
(नेपथ्य में शंखध्वनि होती हैं।)

पांचवा – देख रहे क्या हैं? शंख जय का वह उठा पुकार,
मगधराज, का शुरु हो गया, स्यात[4], विजय दरबार।

छठा– हाँ, राजा जा चुके, जा चुके हैं, चाणक्य प्रवीण,
सेल्यूकस के साथ गया है पण्डित एक नवीन।

सातवां– और सुनो, यह खास बात कहती थी मुझसे चेटी[1]
सेल्यूकस के साथ गई है सेल्यूकस की बेटी।
सब– चलो, चलें, देखें दरबार।
चलो, चलें चलो, चलें।
(सब जाते हैं। पट परिवर्तन)
दृश्य –तृतीय
(चंद्रगुप्त का राजदरबार। सेल्यूकस, उसकी युवती कन्या, मेगस्थनीज एक ओर बैठे हैं। चंद्रगुप्त, चाणक्य और सभासद यथास्थान बैठे हैं। दूसरे दृश्य वाले नागरिक भी आते हैं।)
एक नागरिक – (आपस में कानोंकान)
हैं महाराज खुद बोल रहे,
मत हिलो–डुलो,
चुपचाप सुनों।
चंद्रगुप्त– मगध के सभासदो। पाटलीपुत्र के वीरो।
मगध नहीं चाहता किसी को अपना दास बनाना।
गुरु कहते हैं दास भाव आर्यों के लिए नहीं है,
मैं कहता हूं, मनुजमात्र ही गौरव का कामी है।
मैं न चाहता, हरण करें हम किसी देश का गौरव,
किसी जाति को जीत उसे फिर अपना दास बनाएं।
उठी नहीं तलवार मगध की किसी लोभ लालच से,
और न हम प्रतिशोध भाव से प्रेरित हुए कभी भी।
छिन्न भिन्न है देश, शक्ति भारत की बिखर गई है,
हम तो केवल चाह रहे हैं उसको एक बनाना।
मृदु विवेक से, बुद्धि विनय से, स्नेहमयी वाणी से,
अगर नहीं, तो धनुष–बाण से, पौरुष से, बल से भी।
ऋषि हैं गुरु चाणक्य, नीति हम उनकी बरत रहे है।
भरतभूमि है एक, हिमालय से आसेतु निरंतर,
पश्चिम में कंबोज–कपिश तक उसकी ही सीमा है।
किया कौन अपराध, गए जो हम अपनी सीमा तक?
अनाहूत हमसे लड़ने क्यों सेल्यूकस चढ़ आया?
मदोन्मत्त यूनान जानता था न मगध के बल को,
समझा था वह हमें छिन्न, शायद पुरु केकय सा।
वह कलंक का पंक[2] आज धुल गया देश के मुख से।
हम कृतज्ञ हैं, सेल्यूकस ने अवसर हमें दिया है।
वीर सिकंदर के गौरव का प्रतिभू[3] सेल्यूकस था,
आज खड़ा है वह विपन्न, आहत सा मगध सभा में,
उस बलिष्ठ शार्दूल[4] सदृश निष्प्रभ, हततेज, अकिंचन
पर्वत से टकराकर जिसने नखरद[5] तोड़ लिए हों,
उस भुजंग सा जिसकी मणि मस्तक से निकल गई हो।
उस गज सा जिस पर मनुष्य का अंकुश पड़ा हुआ हो
सभा कहें, बरताव कौन सा मगध करे इस अरि से।
प्रमुख सभासद– महाराज ने कही न ये अपने मन की हो बातें,
यही भाव है मगध देश के धर्मशील जन जन में।
नहीं चाहते किसी देश को हम निज दास बनाना,
पर स्वदेश का एक मनुज भी दास न कहीं रहेगा।
हम चाहते संधि, पर, विग्रह[6] कोई खड़ा करे तो,
उत्तर देगा उसे मगध का महाखड्ग बलशाली।
सेल्यूकस के साथ किंतु, कैसा बरताव करें हम
इसका उचित निदान बताएं गुरु चाणक्य स्वयं ही,
क्योंकि सभा अनुरक्त सदा है उनकी ज्ञान विभा पर।
चाणक्य– आग के साथ आग बन मिलो,
और पानी से बन पानी,
गरल[7] का उत्तर है प्रतिगरल,
यही कहते जग के ज्ञानी।
मित्र से नहीं शत्रुता और
शत्रु से नहीं चाहिए प्रीति।
मांगने पर दो अरि को प्रेम,
किंतु, है यह भी मेरी नीति।
शक्ति के मद में होकर चूर
विजय को निकला था यूनान,
एक ही टकराहट में गया
मगध को वह लेकिन पहचान।
प्रीति जो निकली पीछे झूठ,

भीति[12] क्या? हम तो हैं तैयार,
चरण फिर फिर चूमेगी जीत,
मगध की तेज रहे तलवार।
अतः, है सेल्यूकस के हाथ,
मित्रता ले या ले आमर्ष,[13]
खड़ा है लेकर दोनों भेंट
ग्रीस के सम्मुख भारतवर्ष।

सेल्यूकस– सामने नहीं मंच पर आज
खड़ा है विजयी भारत वीर,
और है मिट्टी पर यूनान,
पराजय की पहने जंजीर।
हमारी बंधी हुई है जीभ,
हमारी कसी हुई है देह,
भला फिर से मांगू किस भांति
गुणी चाणक्य! बैर या स्नेह?
मित्रता या कि शत्रुता घोर,
आपका जो जी चाहे करें,
एक है लेकिन, छोटी बात,
विनय है, उसको मन में धरें।
याद है, कल पोरस के साथ
सिंकदर ने सलूक जो किया?

चंद्रगुप्त – धन्य सेल्यूकस! तुमने खूब
आज गुरुवर को उत्तर दिया।
वीरता का सच्चा बंधुत्व,
झूठ है हार–जीत का भेद,
वीर को नहीं विजय का गर्व,
वीर को नहीं हार का खेद।
किए मस्तक जो ऊंचा रहे
पराजय–जय में एक समान,
छीनते नहीं यहां के लोग
कभी उस बैरी का अभिमान।
सिंकदर ही न, और भी लोग
प्रेम करते हैं अरि के साथ।
मगध का कर यह देखो बढ़ा,
बढ़ाओ अब तो अपना हाथ।
(चंद्रगुप्त सिंहासन पर से अपना हाथ बढ़ाता है। सेल्यूकस दोनों हाथों से उसे थाम लेता है।)

सेल्यूकस– जय हो मगधनरेश। न था मुझको इसका अनुमान
आज पराजित है, सचमुच ही, भारत में यूनान।
जय हो दिन दिन बढ़े मगध का बल, वैभव, उत्कर्ष,
हुआ आज से सेल्यूकस का भी गुरु भारतवर्ष।
संधि नहीं, संबंध जोड़कर मुझको करें सनाथ,
अर्पित है दुहिता यह मेरी, पकड़ें इसका हाथ।
ग्रीस देश की इस मणि को उरपुर[14] में रखें सहेज,
सीमा पर के चार प्रांत देता हूं इसे दहेज।
आज्ञा हो तो राजदूत मेगस्थनीज को छोड़,
अब जाऊं मैं शेष दिवस काटने ग्रीस की ओर।
(चंद्रगुप्त सेल्यूकस की पुत्री को सिंहासन पर बिठाते हैं। मेगस्थनीज उठकर राजा को प्रणाम करता है। नागरिकों का कोरस गाते हुए प्रस्थान।)

सब– जय हो, चंद्रगुप्त की जय हो।
जय हो बल–विक्रम निधान की,
जय हो भारत के कृपाण की,
जय हो, जय हो मगधप्राण की,
सारा देश अभय हो,
चंद्रगुप्त की जय हो।
(गीत दूर पर खत्म होता सुनाई पड़ता है।)
पटाक्षेप

●●●

१ अस्तमित=खत्म हो रहा, २ अरि=शत्रु,
३ तुमुलरोर=भारी शोर, ४ स्यात्=शायद,
५ चेटी=दासी, ६ पंक=कीचड़, ७ प्रतिभू=प्रतिरूप,
८ शार्दूल=सिंह, ९ नखरद=नख व दांत,
१० विग्रह=कलह, ११ गरल=जहर,
१२ भीति=डर, १३ आकर्ण=क्रोध, १४ उरपुर=हृदय

गोपालसिंह नेपाली

अनेक प्रसिद्ध फिल्मों में सफल गीत रचनाएँ और साहित्य को श्रेष्ठ कृतियाँ सोंपने वाले नेपाली जी की कलम से बाल कविता भी अनछुई न रही वे हिन्दी गीतों के शृंगार ओर तरूणाई के हृदयहार कहे जाते थे।

लघु सरिता

◆ कविता

गोपालसिंह नेपाली

यह लघु सरिता का बहता जल,
कितना शीतल कितना निर्मल!
हिमगिरी के हिम से निकल निकल,
यह विमल दूध-सा हिम का जल!
रखता है तन में इतना बल,
यह लघु सरिता का बहता जल!
निर्मल जल की यह तेज धार,
करके कितनी शृंखला पार!
बहती रहती है लगातार
गिरती उठती है बार-बार!
करता है जंगल में मंगल!
यह लघु सरिता का बहता जल!
कितना कोमल कितना वत्सल,
रे जननी का यह अंतस्तल!
जिसका यह शीतल करुणा जल,
बहता रहता युग-युग अविरल!
गंगा-यमुना, सरयू निर्मल!
यह लघु सरिता का बहता जल!

वीरेन्द्र मिश्र

'अपना देश महान', 'सुनो राम की कथा', 'काले मेघा पानी दे' जैसी सुमधुर सरस गीत कृतियाँ देने वाले वरिष्ठ गीतकार वीरेन्द्र मिश्र साहित्य जगत में मध्यप्रदेश का गौरव हैं। बच्चों के लिए रची उनकी गीत रचनाएं सहज कंठस्थ करने योग्य होती है गीतों के झूले उनका गीत संग्रह है।

कविता

आगे आना है

वीरेन्द्र मिश्र

गहरा है अंधियारा, दीया जलाना है,
हमको तुमको, सबको आगे आना है।
ऐसे बढ़ो कि आंधी लोहा मान ले,
ऐस चढ़ो की पुस्तक तुमसे ज्ञान ले,
सागर की गहराई मन में ढालकर-
ऐसे बढ़ो कि पर्वत भी पहचान ले।
मंजिल तो बढ़ने का एक बहाना है,
हमको, तुमको, सबको आगे आना है।
लहरें उठती-गिरती और संभलती हैं,
ऋतुएं भी अपने परिधान बदलती हैं,
बुझ जाता है एक दीया तूफानों में-
उसके पीछे कई मशालें जलती है।
जहाँ नहीं आया परिवर्तन लाना है,
हमको, तुमको, सबको आगे आना है।
कुछ जंजीरे टूटी है कुछ शेष हैं,
अब भी भारत माँ के बिखरे केश है।
जिधर नजर जाती आंसू की भीड़ है,
हम पर तुम पर आँख लगाए देश है।
हम न रूकेंगे आगे गया जमाना है।
हमको तुमको सबको आगे जाना है।

भारतीय बाल कल्याण संस्थान द्वारा

५७वाँ सम्मान समारोह

लखनऊ। भारतीय बाल कल्याण संस्थान कानपुर के संस्थापक स्व. राष्ट्रबंधु जी की पावन स्मृति में संस्थान द्वारा लखनऊ में आयोजित गरिमामय समारोह में बाल साहित्य के वरिष्ठ साहित्यकारों का सम्मान किया गया। इस प्रसंग पर श्रीमती नीलम राकेश द्वारा स्थापित श्री प्यारे मोहन श्रीवास्तव पुरस्कार स्वरूप देवपुत्र के संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना को अंगवस्त्र प्रमाण पत्र एवं ५१०० रु. की सम्मान निधि भेंट की गई। श्री शादाब आलम, श्री निश्चल शर्मा, डॉ. शैलबाला अग्रवा, श्री गुडविन मसीह, श्री रावेन्द्र कुमार 'रवि', श्री रमाकांत शुक्ल को भी अलग-अलग पुरस्कारों से पुरस्कृत हुए।

समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. चक्रधर नलिन,श्रीमती सुधा गुप्ता, डॉ. विनोदचन्द्र पाण्डेय विनोद, श्रीमती नीलम राकेश साहित अनेक साहित्यकार एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। यह जानकारी सचिव श्री बी.के. शर्मा ने दी।

उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा

डॉ.शेष सम्मानित

उ.प्र.हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा ३० दिसम्बर २०१५ को वर्ष २०१४ के लिए उत्कृष्ट बाल साहित्य साधना के अनन्य साधक डॉ. शेषपाल सिहं 'शेष' को सम्मानित किया गया।

उ.प्र. हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री उदयप्रताप सिंह, निदेशक डॉ. सुधाकर अदीब तथा सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री गोपाल चतुर्वेदी के द्वारा उन्हें कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान से अलंकृत किया गया है। इन मनीषियों ने डॉ. शेष को पत्र-पुष्प एवं अंगवस्त्र से समादृत करते हुए पुरस्कार रुप में ५१ हजार सम्मान राशि भी भेंट की है। साहित्य सेवा के लिए अनेक सम्मान, उपाधियाँ एवं पुरस्कार आगामी अन्य उच्च सोपानों पर आरोहित होने की आशाएं व्यक्त की है। ज्ञातव्य है कि श्री शेष देवपुत्र के वरिष्ठ सहयोगी एवं लेखक हैं।

राष्ट्रीय बाल साहित्य सम्मान समारोह सम्पन्न

कई बाल साहित्यकारों, बाल प्रतिभाओं का हुआ सम्मान
देशभर से पधारे ३०० साहित्यकारों ने आयोजन में भाग लिया।

आकोला। राजकुमार जैन राजन फाउण्डेशन के तत्वाधान में ग्यारहवें भव्य बाल साहित्य सम्मान समारोह का आयोजन श्री नाथद्वारा के साहित्य मण्डल सभागार में २ मार्च २०१६ को सम्पन्न हुआ। प्रथम सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार व चिंतक श्री दाऊदयाल गुप्त(भरतपुर) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय बाल कल्याण संस्थान (कानपुर) के महामंत्री श्री एस.बी. शर्मा थे साहित्य मण्डल प्रधानमंत्री श्री श्याम प्रकाश देवपुरा, देवपुत्र के सम्पादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. जयप्रकाश पण्ड्या एवं डॉ. विमला भण्डारी उपस्थित थीं।

राजकुमार जैन राजन द्वारा संपादित 'बाल विशेषांक' के अलावा श्री गोविन्द शर्मा के बाल हास्य कहानी संग्रह 'बन्दर की करतूत' कीर्ति श्रीवास्तव के बाल कविता संग्रह 'मेहनत का फल मीठा होता' श्री मोतीलाल गौड़ विमल के बाल कविता संग्रह 'बगिया के फूल का' लोकार्पण सम्पन्न हुआ। देवपुत्र के संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना को डॉ. राष्ट्रबंधु स्मृति बाल साहित्य सम्मान से सम्मानित करते हुए ५ हजार की सम्मान राशि निधि तथा सम्मान पत्र भेंट किए।

समारोह में श्रीमती पवित्रा अग्रवाल, श्री पवन पहाड़िया, श्री मो. अरशद खान, डॉ. प्रीति प्रवीण खरे, श्री गोविन्द भारद्वाज, श्रीमती कमलेश चौधरी, डा. मो. साजिद खान एवं डॉ. धर्मचंद मेहता भी अलग-अलग सम्मानों से समादृत हुए।

इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों से ३०० के लगभग साहित्य सृजकों ने भाग लिया।

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' की

पुस्तकों का विमोचन सम्पन्न

भोपाल। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित खिरहनी कटनी प्राथमिक कन्या शाला में पदस्थ शिक्षिका सुपरिचित कवयित्री, कथाकार एवं बाल साहित्यकार डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' की अभी हाल में प्रकाशित दो बाल कहानी संग्रह 'जंगल की एकता' 'पम्मी-शम्मी' का विमोचन एवं लोकार्पण गत दिवस मानव भवन, भोपाल के रामकिंकर सभागृह में आयोजित हिन्दी लेखिका संघ के २१ वें स्थापना एवं साहित्यकार सम्मान समारोह में देश के प्रख्यात साहित्यकार मालती जोशी , मुंबई से गीतकार सुश्री संतोष श्रीवास्तव, माखनलाल चतुर्वेदी वि.वि. भोपाल के कुलसचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी, तुलसी मानस प्रतिष्ठान अध्यक्ष रमाकांत दुबे के हाथों सम्पन्न हुआ।

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

श्री गुरूजी छात्रावास

उ.मा. आदर्श विद्या मन्दिर, राजापार्क, जयपुर
दूरभाष 2615249, मो. - 9799394656

छात्रावास प्रवेश सूचना सत्र 2016 - 2017

विशेषताएं

1. उच्च योग्यता प्राप्त अनुभवी आचार्य
2. खेलकूद हेतु विस्तृत मैदान एवं योग्य प्रशिक्षक
3. वन विहार एवं देश दर्शन कार्यक्रम
4. स्पोकन इंग्लिश की विशेष कक्षाएँ
5. संस्कार युक्त शिक्षा पर विशेष आग्रह
6. सुरूचिपूर्ण एवं पौष्टिक अल्पाहार एवं भोजन
7. एक बड़े कक्ष में 4 छात्रों की आवास सुविधा
8. एन.सी.सी.
9. नियमित खेलकूद एवं योग कक्षाएं
10. स्नेहपूर्ण पारिवारिक वातावरण
11. शैक्षिक उन्नयन हेतु अतिरिक्त कक्षाएं
12. श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम

कक्षा 9 वीं, 10वीं व 12 वीं में प्रवेश परीक्षा एव कक्षा 11वीं में प्रवेश अंको के आधार पर प्रवेश दिये जाते हैं

कक्षा 10 वीं में 90 प्रतिशत अंक पर रू. 10,000/- एवं 94 प्रतिशत अंक पर रू. 25,000/-की शुल्क में छूट दी जायेगी।

पंजीयन फार्म
200/-रू. नगद या 250/-रू.
बैंक ड्राफ्ट भेजकर मंगवा सकते हैं।

इंजीनियर - 2652	सी.ए. - 162
डॉक्टर - 540	सी.एस. - 130

कक्षा - 12 का परीक्षा परिणाम 2014–15

संकाय :— विज्ञान, कला, वाणिज्य

विज्ञान

भैया का नाम	भौ.विज्ञान	र.विज्ञान	गणित
आशीष शर्मा	98	96	100
रवि प्रकाश	88	94	99
देवेन्द्र जांगिड	96	87	95
अंकित	87	91	100
कुशाल शर्मा	88	89	97

वाणिज्य

भैया का नाम	लेखाशास्त्र	गणित
यश रामनानी	93	100
अक्षय	100	95 (अर्थशास्त्र)
अमन	94	88
जय कुमार	96	92

(गणित में 16 छात्रों के 90 प्रतिशत से अधिक अंक)

विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी, हमें जिन पर गर्व है।

1. श्री अनिल कौशिक	I.P.S भूतपूर्व डीजीपी पंजाब पुलिस
2. श्री आशीष आनन	I.P.S एसीपी अंडमान
3. डॉ. प्रवीण मिश्रल	I.R.S सहायक आयकर आयुक्त
4. श्री शैलेन्द्र शर्मा	I.R.S अतिरिक्त आयकर आयुक्त
5. श्री मानसिंह राठौड़	R.J.S
6. श्री अमित जौहरी	R.A.S
7.. श्री सौरभ शेखावत	भारतीय सेना में ब्रिगेडियर - एवरेस्ट विजेता
8.. श्री योगमित्र दिनकर	R.A.S
9. श्री कृष्ण कुमार पारीक	I.R.S उपमहाप्रबन्धक, रेल परिचालक-उ.प.
10.श्री राजीव सिंह	I.R.S जन सूचना अधिकारी - उ.प. रेलवे
11.डॉ. मनोहर अगनानी	I.A.S मध्य प्रदेश
12.श्री दुष्यन्त मुद्गल	I.A.S निदेशक डाक विभाग
13.श्री उपस्पति त्रिपाठी	R.A.S
14श्री मुकुल शर्मा	R.A.S
15.श्री विभू कौशिक	R.A.S
16.श्री सुरेन्द्र यादव	R.A.S
17.श्री चन्दन दुबे	R.A.S
18.श्री अरूण कुमार	विश्व प्रसिद्ध हृदय रोग विशे. अमेरिका
18.डॉ. जगत प्रसाद नरुला	

कक्षा - 10 का परीक्षा परिणाम 2014–15

भैया का नाम	विज्ञान	गणित	संस्कृत
सुमित गौडावन	100	100	94
सूरज मीणा	98	93	92
रितिक शर्मा	98	88	93
पीताम्बर शर्मा	96	93	97
नरेश मीणा	95	90	89
जगदीश सैनी	100	85	99
आशीष	92	97	97
अमित चौहान	95	94	98

छात्रावास के भैयाओं की खेल क्षेत्र में उपलब्धियाँ

1. भैया शुभम चौधरी (नेशनल S.G.F.I. फुटबाल) 2010
2. भैया सोमवीर सिंह (नेशनल S.G.F.I. फुटबाल) 2010
3. भैया तरिन शेखावत (नेशनल S.G.F.I. पिस्टल शूटिंग) 2014
4. भैया हेमन्त सैनी (नेशनल S.G.F.I. पिस्टल शूटिंग) 2014
5. भैया कोविद सोलोत (नेशनल S.G.F.I. पिस्टल शूटिंग) 2015
6. भैया सौरभ खटाना (नेशनल S.G.F.I. पिस्टल शूटिंग) 2015
7. भैया चैतन्य चौधरी (नेशनल S.G.F.I. पिस्टल शूटिंग) 2016
8. भैया यश दासवानी (नेशनल S.G.F.I. पिस्टल शूटिंग) 2016
9. भैया विकास जाट (नेशनल S.G.F.I. रायफल शूटिंग) 2016
10.भैया आशाराम चौधरी (नेशनल S.G.F.I. रायफल शूटिंग) 2016
11.भैया कोविद सोलोत (नेशनल S.G.F.I. बीच वॉलीबाल) 2016
12.भैया टीनू पोसवाल (नेशनल S.G.F.I. बीच वॉलीबाल) 2016

विशेष:- विद्यालय की रस्साकस्सी की 17 वर्षीय टीम भी नेशनल S.G.F.I. खेल कर आयी है।
पिस्टल और रायफल शूटिंग के प्रशिक्षण की विशेष व्यवस्था।

अध्यक्ष : दामोदर दास मोदी

प्रधानाचार्य : रामानंद चौधरी

Parwati Prema jagati
SARASWTI VIHAR

पार्वती प्रेमा जगाती सरस्वती विहार
वरिष्ठ माध्यमिक आवासीय विद्यालय (केवल बालकों के लिए)
दुर्गापुर, तल्लीताल, नैनीताल – 263130 (उत्तराखण्ड)

(विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध, सी.बी.एस.ई. नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त)

विशेषताएँ

- भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा।
- 10 वीं बोर्ड परीक्षा में 14 छात्रों ने 10 सी.जी.पी.ए. प्राप्त किया। सरस्वती विहार का अब तक का सर्वोत्तम परीक्षाफल 2014 में रहा।
- सीनियर सेकैण्ड्री परीक्षा में शुभम पाण्डेय ने सर्वोच्च 94 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। जो कि एक **Record** है।
- साइंस व कॉमर्स विषय के अध्ययन की सुविधा। समस्त कक्षाऐं **Smart Classes** हैं।
- एन0सी0सी0 की जूनियर व स्काउट्स, एन0एस0एस0 की प्रभावी व्यवस्था हैं।
- प्रशिक्षित, अनुभवी व नवीन तकनीकी से युक्त फैकल्टी, **Spoken English** हेतु अतिरिक्त कक्षाऐं।
- स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एस.जी.एफ.आई.) की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में विद्यालय ने प्रथम रजत पदक प्राप्त किया। 56 छात्र **S.G.F.I.** हेतु चयनित।
- भौतिकी, रसायन व जीव विज्ञान की उच्चीकृत प्रयोगशालायें।
- कक्षा द्वादश में अधययनरत अधिकांश छात्रों का इंजीनियरिंग, मेडीकल व सेना आदि क्षेत्रों में प्रथम प्रयास में चयन हुआ। 2 छात्र आई0आई0टी0 में चयनित। 12 छात्रों का दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश हुआ।
- छठी कक्षा से ही अनिवार्य कम्प्यूटर इण्टरनेट व उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था।
- शूटिंग रेंज एवं आर्चरी के प्रशिक्षण की व्यवस्था।
- उच्च गुणवत्ता से युक्त छात्रावास एवं भोजनालय की व्यवस्था।
- विशाल बहुउद्देशीय सभागार तथा आधुनिक सुविधाओं से युक्त चिकित्सालय।
- शैक्षिक संदर्शन एवं **Career Counselling** की व्यवस्था के साथ – साथ **Remedial Classes** की व्यवस्था।
- सी0सी0ई0 की विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रत्येक छात्र को विकास का अवसर।
- विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु **Apptitude Classes** की व्यवस्था।
- प्रवेश के लिए कक्षा 6th व 9th का प्रवेश फार्म प्रतिवर्ष 1 दिसम्बर से मिलना प्रारम्भ।

दूरभाष – (05942) 235846, 238970 मोबाईल नं.: 07351006369, फैक्स:(05942) 236853
ई मेल: ppjsvihar@gmail.com वेबसाईट– www.ppjsvihar.in

कामेश्वर प्रसाद काला	डॉ. के.पी.सिंह	विपिन अग्रवाल	डॉ. किशनवीर सिंह शाक्य
अध्यक्ष	व्यवस्थापक	कोषाध्यक्ष	प्राचार्य

धरोहर विशेषांक पर हार्दिक शुभकामनाएँ!

सरस्वती विद्यापीठ

(आवासीय विद्यालय)

AN ISO 9001 : 2008 Certified

कक्षा षष्टम् से द्वादश तक

AN ISO 9001:2008 Certified

मध्यप्रदेश की प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त विद्यालय

उत्तम शैक्षणिक व्यवस्थायुक्त आवासीय परिसर

पोस्ट बाक्स नं. 10, उतैली, सतना (म.प्र.) 485 001

लगातार १० वर्षों से कक्षा १०वीं एवं १२वीं बोर्ड परीक्षा का शत् प्रतिशत परीक्षा परिणाम

ई-मेल : svidyapeeth@rediffmail.com

दूरभाष : 07672-250073, 250870, 250644, 9755074858

प्रिय पाठको!

हिन्दी बाल साहित्य के भण्डार भरने वाले सरस्वती के अनेक वरदपुत्र-पुत्रियाँ इस देश की माटी से जन्में हैं। धरोहर अंक में कतिपय उन शीर्षस्थ साहित्यकारों की बाल रचनाएं आपके लिए प्रस्तुत है जिन्हे प्रायः बच्चों के साहित्यकार इस रूप में कम जाना जाता है। तथापि पृष्ठों की मर्यादा के कारण अनेक रचनाकार एवं अनेक रचनाएं निश्चित रूप से छूटी है यह अंक ऐसे साहित्य की बानगी भर प्रस्तुत कर रहा है। अंक पर आपकी प्रतिक्रियाओं को जानने की उत्सुकता रहेगी। पत्र अवश्य लिखें। -संपादक

पंजीयन क्र.2672

संस्था कोड- 362068

सरस्वती शिशु मंदिर/उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

अमरकण्टक जिला-अनूपपुर (म.प्र.)

फोन: 07629-269413

कक्षा आठ से द्वादश तक डे बोर्डिंग व्यवस्था (भैया/बहिनों दोनों के लिए)

कक्षा आठ से द्वादश तक आवासीय व्यवस्था (केवल भैयाओं के लिए)

सम्पर्क सूत्र

अध्यक्ष 9424330535

व्यवस्थापक 9424334020

प्राचार्य 9425883506

अमरकंटक आवासीय विद्यापीठ

धूनीपानी मार्ग, जमुनादादर अमरकंटक, जिला अनूपपुर (म.प्र.)

विशेषताएँ

१. प्राकृतिक सुरम्य वातावरण में ७.४ एकड़ भूमि में स्थित आवासीय भवन एवं विद्यालय परिसर।

२. म.प्र. शासन से मान्यता प्राप्त।

३. कक्षा आठ से द्वादश तक।

४. सर्व सुविधायुक्त आवासीय छात्रावास।

५. शहर के कोलाहल से दूर सुरम्य स्थल।

६. कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था।

७. सरस्वती शिक्षा परिषद् द्वारा प्रदेश के खेल मण्डल एवं अखिल भारतीय योग केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना।

८. अनुभवी एवं योग्य आचार्यों द्वारा अध्यापन।

विद्या भारती अ. भा. शिक्षा संस्थान, सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मालवा के मार्गदर्शन एवं भारतीय आदर्श शिक्षण समिति, मन्दसौर द्वारा संचालित
सरस्वती विद्या मन्दिर सी.बी.एस.ई. उ. मा. वि.
Affiliated to C.B.S.E. (Affiliation No. : 1030696)
आवासीय विद्यालय Residential School
सरस्वती विहार शैक्षिक संस्थान, संजीत मार्ग, मन्दसौर (म. प्र.)
कक्षा नर्सरी से
12th तक
छात्रावास (Hostel) में कक्षा 6 से 12 तक के 300 भैयाओं हेतु आवास, भोजन, शिक्षण एवं कोचिंग की उत्तम व्यवस्था ।
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (C.B.S.E.) नई दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल म. प्र. भोपाल द्वारा मान्यता प्राप्त पृथक-पृथक विद्यालय
www.saraswatividyamandir.in
विशेषताएँ
1. आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित आवासीय भवन।
2. वाचनालय, पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर सुविधा।
3. शत् प्रतिशत, गुणात्मक परीक्षा परिणाम।
4. S.G.F.I. एवं शासकीय खेलों में उपलब्धियाँ।
5. शिक्षा, संस्कार, अनुशासन के माध्यम से जीवन निर्माण।
6. PMT, PET, AIEEE, ECA, CS में विद्यार्थियों को सफलता।
7. SPOKEN ENGLISH की नियमित कक्षाएं।
8. प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु विशेष कोचिंग।
9. विद्यालय के अनेक छात्र-छात्राऐं डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टड अकाउण्टेंट उच्च पदों पर आसीन।
10. आवासीय विद्यालय में 300 भैयाओं के आवास, भोजन, शिक्षण एवं कोचिंग की उत्तम व्यवस्था।
11. अभिभावक सम्मेलन, शारीरिक प्रदर्शन व विशिष्ट रंगमंचीय कार्यक्रम एवं शैक्षणिक भ्रमण।
12. शहर के कोलाहल से दूर, पारिवारिक वातावरणयुक्त आधुनिक गुरुकुल।
प्रवेश प्रारम्भ
प्रवेश आवेदन-पत्र उपलब्ध
प्रार्थना
शारीरिक शिक्षा
सहभोज
आवास कक्ष
संचालित संस्थाएँ -
सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय, मन्दसौर
सरस्वती विद्या मन्दिर उ. मा. विद्यालय
शिशु वाटिका (खेल-खेल में शिक्षा संकल्पना), मन्दसौर
कार्यालय समय : प्रात: 8.30 से 1.30
गोविन्द वैशंपायन
अध्यक्ष
राजदीप परवाल
सचिव
बालाराम गुप्ता
प्रबंधक
राघवेन्द्र देराश्री
प्राचार्य
भारतसिंह बोराना
अधीक्षक
सरस्वती विहार आवासीय परिसर मन्दसौर म.प्र.
सम्पर्क करें - 07422 - 234329, 234070 | Mob. : अधीक्षक : 89896-04188, 70244-40312, प्राचार्य : 99923-502484, प्रबंधक : 99264-47109

पवित्रता का एक
कुंभ
22
देश काल से परे का एक अदभुत अनुभव जो
उज्जैन तैयार है
श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए।
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

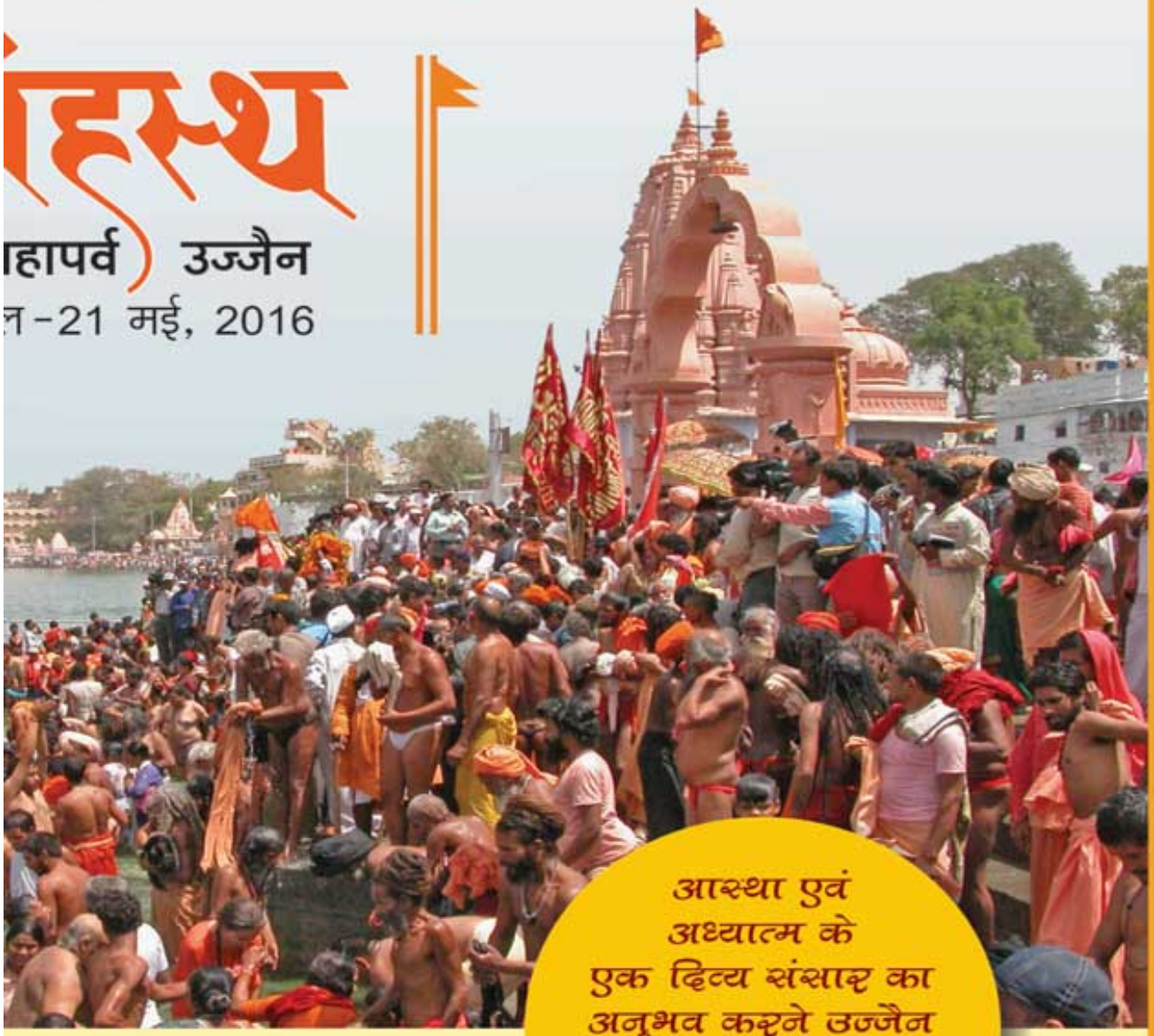

ण, आपकी प्रतीक्षा में
सिंहस्थ
हिस्थ
हापर्व उज्जैन
ल-21 मई, 2016
आस्था एवं
अध्यात्म के
एक दिव्य संसार का
अनुभव करने उज्जैन
अवश्य पधारिये.
शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
ा है बारह वर्षों में
www.simhasthujjain.in /SimhasthUjjain2016 /Simhasth
R.O. No. D-77999

प्रेरक प्रसंग

मानवता का बिल

प्रस्तुतिः सचिन घोड़गांवकर
अनुवादः संदीप भालेराव

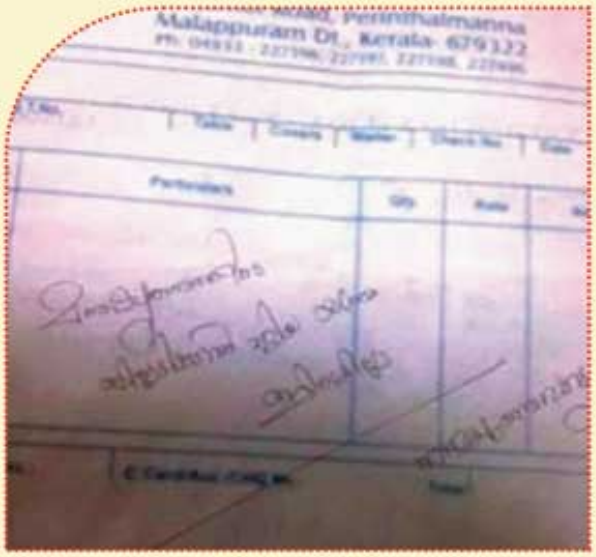

केरल के मल्लापुर भाग के एक रेस्टोरेंट में एक सज्जन भोजन कर रहे थे। बाहर खड़े वे भाई बहन भूख से व्याकुल आस भरी नजरों से भोजन की थाली निहार रहे थे। सज्जन की नजर पड़ी तो दोनों को अंदर आने का इशारा किया, बच्चों के नाजुक पग छोटे-छोटे कदमों से भरते हिच-किचाहट और घबराहट के साथ धीमे-धीमे अंदर की ओर बढ़ चले। भोजन करते-करते ही सज्जन ने इशारे से ही पूछा, क्या खाओगे? मासूम बच्चों की ऊंगली थाली की ओर घूम गई। बच्चों के लिए भी भोजन मंगवाया गया...छोटी हथेलियों में जितना आ सकता था उतना ग्रास बना बना कर पटापट खाने लगे। ऐसा आग्रह तक उन्हें करने की आवश्यकता नहीं पड़ी 'भरपेट खाना है बच्चों!' उनका पूरा ध्यान जैसे थाली पर ही टिक गया था। मासूम और निष्पाप पेट की भूख की भीषण आग शांत हो रही थी। बाल देव भोग लगा कर तृप्त हुए भाई बहन का भोजन...पूरा हुआ। तभी रेस्टोरेंट का बिल भी आ गया। बिल देखकर सज्जन चकित रह गए । बिल पर उन्हें जो नजर आया यह अभूतपूर्व और विस्मरणीय था...बिल पर लिखा था-

''हमारे पास वह मशीन या वह पद्धति नहीं जो मानवता की कीमत आँक सके वह आपकी ही भांति अनमोल है, परमेश्वर आपका कल्याण करें।''

देवपुत्र

कविता : शैवाल सत्यार्थी

श्री शैवाल सत्यार्थी के साथ बाल साहित्य सृजनपीठ के निदेशक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना एवं प्रख्यात साहित्यकार श्री जगदीश जी तोमर ग्वालियर में।

हर माह आया है
देवपुत्र जब -
यूँ लगता है जैसे
हरे-भरे उद्यान में
एक नया पुष्प
खिल जाता है तब...
बड़े भैया की बातें
उनकी भली-भली
सीख और सौगातें-
हर मन को भाती हैं...
उद्यान की सारी कलियाँ
खिल-खिल जाती हैं
प्यारे देवपुत्र के
गीत गाती हैं...
तो, नहीं यह कोई
सामान्य पुत्र
है असामान्य यह-
अनुपम, अभिनव
भारत-पुत्र यह!
विश्व-पुत्र यह !!

● ग्वालियर (म.प्र.)

उत्कृष्ट शिक्षा.....बेहतर परिणाम

सरस्वती विद्या मंदिर कल्याणगंज, खण्डवा

(श्री विवेकानंद बाल कल्याण समिति द्वारा संचालित)

कक्षा 12वीं

जिले में प्रथम स्थान
सिमरन पटेल
९४.८ प्रतिशत
राज्य में १०वां स्थान

जिले में द्वितीय स्थान
कार्तिक उपाध्याय
९३ प्रतिशत

जिले में तृतीय स्थान
आयुषी यवले
९२.४ प्रतिशत

तरुण राठौर
९१.४ प्रतिशत

अंतरराष्ट्रीय डॉजबाल प्रतियोगिता भूटान में
प्रतिक एवं मिलिंद को स्वर्ण पदक

कक्षा 10वीं

आरती उपाध्याय
९४.२ प्रतिशत

शिवम तिरोले
९२.९ प्रतिशत

अदिती पटेल
९१.९ प्रतिशत

हर्षिता सैनी
S.G.F.I कराटे
में काश्य पदक

शिशु हमारी धरोहर है.... इसे संवारना-संस्कारवान बनाना हम सभी का कर्तव्य है।

हमारा लक्ष्य :- हमें ऐसे बच्चों का निर्माण करना है जिनके चेहरे पर आभा, शरीर में बल, मन में प्रचण्ड इच्छाशक्ति, बुद्धि में पाण्डित्य, जीवन में स्वावलम्बन, हृदय में शिवा, प्रताप, प्रहलाद की जीवन गाथायें अंकित हों उठें, जिन्हे देखकर महापुरुषों की स्मृतियाँ झंकृत हो उठे।

हमारी विशेषताएं

१. कक्षा के.जी.से १२ तक
२. अनुभवी एवं विशेषज्ञ आचार्य
३. परिवार शिशु वाटिका में आडियो-विडियों पद्धति से शिक्षा
४. के.जी.१ से स्पोकन इंगलिश
५. श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम तथा शिक्षा के संस्कारमय वातावरण

आधुनिक शिक्षा प्रणाली
नेक्ट एजुकेशन

कल्याणगंज, खंडवा फोन: 0733–22222324

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्प्लेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान संपादक - कृष्णकुमार अष्ठाना

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७

आर.एन.आय. पं.क्रं. ३८५७७/८५

MAHASHAY CHUNILAL SARASWATI BAL MANDIR

SENIOR SECONDARY SCHOOL, L-BLOCK, HARI NAGAR, NEW DELHI

(Affiliated to C.B.S.E.)

Academic Levels Offered: (Boys & Girls)

Secondary / Middle School: Class 6 - 8

Senior School : Class 9 - 11

MCL Saraswati Bal Mandir is a part of Samarth Shiksha Samiti runs under Vidya Bharti Akhil Bhartiya Shiksha Sansthan. Our education system offers a number of purpose-built campuses. The MCL SBM School offers quality education from Class VI To XII.

MCL School Facilities & Attractions

Outstanding C.B.S.E. Results

. First School under Vidya Bharti trapping SOLAR ENERGY.

. Special Concession to students securing 9.6 and Above CGPA in Class X.

. Sports Academy, Gym & Special Training for students selected for school games federation of india (SGFI).

. Audio Visual based teaching with Smart Classes.

.Special Awareness programs for Girls - A step towards Social Responsibility.

. A well stocked comprehenssive & digital library.

. CCTV camera for security.

. Fire Safety Plants.

. National Social Services (NSS).

For Details Contact:
Mr. Ajay Kumar Awasthi (Principal)
MAHASHAY CHUNILAL SARASWATI BAL MANDIR
SR. SEC. SCHOOL,L-BLOCK, HARI NAGAR, N.D.-64

TEL: 011 - 28124302, 28121540
E-mail: sbmhn@rediffmail.com Website: MCLSBVM.in

IT society